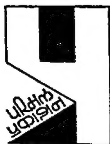
पाँच

नुक्कड़ नाटक

जैसे हम लोग जैसे हम लोग जैसे हम लोग जैसे



परिमल प्रकाशन

१७, एम आई जी. बाघम्बरी आवास योजना, अल्लापुर

इलाहाबाद २११००६ फोन-५२७७



म लोग जैसे हम लोग जैसे हम लोग जैसे हम लो

सम्पादक
तपन बनर्जी

प्रकाशक
परिमल प्रकाशन
१७, एम० आई० जी०
बाघम्बरी आवास योजना
अल्लापुर, इलाहाबाद-२११००६



मुद्रक
पियरलेस प्रिन्टर्स
१, बाई का बाग
इलाहाबाद-२११००३





आवरण
इम्पैक्ट, इलाहाबाद



प्रथम संस्करण : १९८५ ईसवी
मूल्य : बीस रुपये

इस पुस्तक में पाँच नुक्कड़ नाटक हैं। इन्हें हमारे संगी-साथियों ने खेला है और आगे भी खेलेंगे। इसी के लिये इन्हे प्रकाशित किया जा रहा है। आम आदमी के संघर्षरत व्यवहार और संस्कृति का इससे करीबी रिश्ता और किसी माध्यम से नही होता। इस कला माध्यम मे जनता ही सब कुछ है। लेखक, अभिनेता और दर्शक मे यहाँ कोई द्वैत नही होता। करोड़ों रुपये से बने नगरीय रंग-मंच तो कुछ विशेष लोगों का मनोरंजन करते हैं। अभिजात्य संस्कृति को जिन्दा रखने का काम उनका ही होता है। वहाँ मुनाफा कमाने के लिये प्रदर्शन होते हैं। पतनशील मूल्यो के प्रति आकर्षण पैदा करना, जनता को संघर्ष से विलगाना अथवा व्यवस्था के प्रति गुस्से को अराजक दिशा की ओर ले जाने का काम करते हैं ये रंग-मच।

नुक्कड नाटको ने लोक संस्कृति की परम्परा मे अपना विकास किया है। पहले इनमें कलात्मक कमजोरियाँ थी, पर इधर इनमे गुणात्मक परिष्कार आया है। सामूहिक कला के अभिनव प्रयोगों के साथ लोकप्रियता की वास्तविक और सार्थक दिशाओ की खोज हो रही है। इन नाटको को व्यापारिक रंगमंच का जवाब मानना चाहिये।

'मध्य प्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ' की प्रकाशन योजना की यह तीसरी पुस्तक है। 'तय तो यही हुआ था' और 'आसपास की दुनियाँ' की प्रतियाँ आपके पास पहुँच चुकी है। दोनों पुस्तको को खूब पसन्द किया गया है। 'तय तो यही हुआ था' को तो कई प्रादेशिक-राष्ट्रीय पुरस्कार मिले है। लोगों ने कहा है कि इसकी कविताएँ तमाम औसत अनुभवों को चीरती है तथा श्रेष्ठ कविता की नमूना है। हम अपने साथियो के लगातार सहयोग से उत्साहित हुये है। इस तीसरी पुस्तक मे कुछ विलम्ब हुआ, इसके लिये हम क्षमा चाहते है। योजना को आगे बढाने के लिये हम आपसे पुन. संवाद कायम करेंगे। आपके सुझावो का हमारे लिये बहुत महत्व है।

अनुक्रम





पाँच नुक्कड़ नाटक

जैसे हम लोग

जैसे हम लोग

नाटक

प्रथम प्रदर्शन : एक मई उन्नीस सौ पचहत्तर
भूमिकाएँ : नन्दकिशोर पांडेय, निकुंज श्रीवास्तव,
अजय घोष, अलखनन्दन
निर्देशन : अलखनन्दन—विवेचना, जबलपुर
के लिए

(फोटोग्राफर, दफ्तर का कर्मचारी, मजदूर, नौकरी में फिलहाल लगा हुआ नौजवान और गोल-माल)

(पहला आदमी। यह फोटोग्राफर है। साफ सफेद कुर्ता और पैजामा और कंधे में टंगा कैमरा। सूत्रधार इसे माना जा सकता है।

आगे-आगे फोटोग्राफर और पीछे दो आदमी बातचीत करते हुए चल रहे हैं।

इन दो में, एक कर्मचारी है, जिसके कपड़ों की क्रीज तो टूट ही चुकी है, शरीर भी उसी तरह टूट चुका है। दूसरा मजदूर है। इसके बारे में क्या कहा जाय?) बातचीत के टुकड़े :

: ठीक है, ठीक है तो फिर बतलाइए न···आगे न कहेंगे टरकायेंगे, तो काम कैसे चलेगा···भई हर सवाल का जवाब मुझसे क्यों पूछते हो···साहब, इसी तरह से तो हम बनाए जाते हैं या फिर तसल्ली दे दी जाती है···

: कि तुम्हारा जमाना भी आएगा, लगन से काम करो मालिक के साथ पूरी वफादारी···पेट के साथ पूरी गद्दारी···यानी अंतड़ियों का मामला···ओ हो, भई अब बस भी करो, बच्चों की तरह, हाँ बच्चों की तरह, बच्चों की तरह ?

(तीनों आपस में उलझते हुए दर्शकों के बीच आ जाते हैं। फोटोग्राफर अचानक ही दर्शकों की ओर देखता है, मुद्रा बदलता है और दोनों को पीछे छोड़ता हुआ थोड़ा आगे आता है)

फोटोग्राफर : (दर्शकों से) अरे !···दोस्तो, नमस्कार। मैं इस शहर में, यानी कि आपके शहर में आज सुबह ही आया हूँ—

पहली बार ही तो। न जाने क्यों एकदम पहली बार देखा हुआ शहर मुझे बाग जैसा खूबसूरत दिखता है फिर बाद में तो मछलीघर जैसा। बिल्कुल वैसा ही जिस तरह का मेरा शहर है। (हँसी) मुश्किलें और मछलियाँ हर जगह एक सी हैं न, शायद इसलिए। चीजों को खास एंगिल से देखने की आदत पड़ गई है। गन्दी आदत है'''और क्या बड़े मजे की चीज है फोटो उतारना। नालों में बजबजाते कीड़ों और फटे कपड़ों में से भागते हुए स्तनों के फोटो आपको मजा दे सकते हैं, पर नंगी आँखें ? आह ! मैं दावे से कह सकता हूँ।

इधर मैं कुछ दर्शनीय स्थानों की फोटो उतारने के लिए आया हूँ। भेड़ाघाट और धुंआधार। आदमी की रुचि प्राकृतिक घटनाओं में बढ़नी चाहिए। आदमी की रुचि आदमी के लिए तो घट ही गई है; कहीं प्राकृतिक चीजों में भी न घट जाए, इसका डर है। (हँसी) इसी सिलसिले में यहाँ आना हुआ। फिर ये मिल गए (दोनों की ओर इशारा) इन्होंने जिद की। कहने लगे, जबलपुर यह नहीं है। जबलपुर की तस्वीर लेना हो, तो हमारे साथ चलिए मदार टेकरी और बाबा टोला जैसे मुहल्लों की तरफ। मैं राजी हो गया। मैं भी जानता हूँ ऐसे गलीज मुहल्लों और बेजुबानों की दम पर दरदराते मुहल्लों और मुटियाते महामानवों का 'निर्माण' हो पाता है। जगमग मुहल्लों में से शहर की पहचान निकालना असंभव है। शहर की खास पहचान उन बेजुबानों की बस्ती में मौजूद होती है। शहर की नब्ज वहीं जिन्दा होती है, जहाँ जिन्दगी, इनकी धीरे-धीरे मरती होती है। खैर छोड़िये ! कवित्त

करने में क्या फायदा रखा है। तो मैं राजी हो गया। किन्तु देखिये, मुसीबत कैसे गले पड़ती है। जब से साथ हुआ है, लगातार प्रश्न पर प्रश्न किये जा रहे हैं। अपने बारे में और हिन्दुस्तान के बारे में।···बिल्कुल बच्चों की तरह।

कर्मचारी : देखिये। आप रुकिए। याद कीजिए, आपने यह नहीं कहा था कि जबलपुर इन संगमरमरी चट्टानों से जोरदार हो गया है।

फोटोग्राफर : कहा तो था।

कर्मचारी : तब मैंने कहा था कि जनता जनार्दन को इन सबकी साल मे दो बार याद सताती है। मेले और मेहमान के वक्त। बाकी दिन का कार्यक्रम तो सिर्फ पेट और अस्पताल के इर्द-गिर्द होता है।

फोटोग्राफर : हाँ, कहा था।

कर्मचारी : तब आप हँसे थे।

फोटोग्राफर : ठीक।

कर्मचारी : इसके बाद मैंने आपकी जानकारी बढ़ाई कि संगमरमर शक्कर के चूरे में जा घुसता है।

फोटोग्राफर : इसके बाद आपने कहा—यह चूरा हमारी नहीं, सेठ की तोंद बढ़ाता है।

कर्मचारी : इससे आप हँसे थे और आपने मुझे काबिल बतलाया। आपने मुझे अपने साथ रख लिया। खुद ही तो तमाम अँधेरी गलियों और गंधाते टोलों में जाने के लिए उतावली करने लगे थे।

फोटोग्राफर : किन्तु साथ रहने का यह तरीका है! मामूली से प्रश्न —ऊंह—बच्चों जैसी बातें।

कर्मचारी : आदमी साथ रहता है, तो बातें करता ही है। फिर आप

हैं समझदार आदमी। हम सोचे कि जो हमें नहीं मालूम, आज तक नही मालूम थी, वे बातें पूछ ली जायें।

फोटोग्राफर : हां! यही बिल्कुल यही। मेरी परेशानी का कारण यही है। जिन्दगी भर आप मामूली बातों को नही जान पाये। आप नही जान पाये कि आदमी और सुअर की जिन्दगी में फर्क कहां से शुरू होता है। या फिर अनदेखा…।

कर्मचारी : देखिए…।

फोटोग्राफर : नहीं। कसूर पूरम्पूर आपका नही है। लाखो-लाख आदमी ऐसे होंगे, हैं भी, जिन्हें जिन्दगी का मतलब ठीक-ठीक नही मालूम, किन्तु अपनी सुविधा मुताबिक पारिभाषित करते चुपचाप जिये जाते हैं। किन्तु आश्चर्य होता है और दुःख भी……।

कर्मचारी : क्यों?

फोटोग्राफर : यही कि आप से टकराने वाले क्या मठ्ठर घोंघे हैं?

कर्मचारी : मतलब मैं समझा नही।

फोटोग्राफर : आपके समय के साझीदार कौन हैं? क्या वे एक गुनगुनाती बेहतर जिन्दगी के बारे मे आपस मे नहीं बतियाते? (छोटी चुप्पी के बाद) मैं वैसी जिन्दगी के बारे में नही कह रहा, जो सिर्फ कागजों या फिल्मों मे पाई जाती है। दोस्त, हमे ऐसी जिन्दगी चाहिए जिसके लिए पहले आग की जरूरत होती है—आग?

कर्मचारी : जिन्दगी के लिए आग?

फोटोग्राफर : हां, एक समझदार आग जो दुनिया की बेहूदा और नृशंस चीजों को खाक करने के लिए आदमी को तैयार करे। इसके लिए अपने साझीदार, जो हमारे और हमसे छोटे तबके के है, आग को बनाये रखने के लिए आगे

आना होगा। बोलो आपके कितने साथी है……।

कर्मचारी : (मजदूर की ओर होता है और जरा तेज स्वर में कहता है) अबे लमढ़ग ! कब तक तू चुप रहेगा। बोल। बता बाबू को कि एक हाथ की खबर दूसरे हाथ को नही रहती और भोजन गड़ाप् से हो जाता है।

मजदूर : हम हैं अज्ञानी। दुनिया के फेर में पड़ते नहीं रहे। बाबूजी बताते रहे कि हममे ताकत सबसे अधिक है, बशर्ते कि सब गरीब लोग मिल जाएँ। इसी कारणवश हम भी साथ हो गये। सोचे रहा कि पूछेंगे—भइ गरीब तो गरीब है। मजूरी करता है और रात को आटा खरीद के रोटी थोपता है। ज्यादे हुआ तो एकाध दिन कच्ची पी लेता है। (चुप्पी) ताकत। यही तो कहा रहा बाबूजी आपने, सो हम भी लग गए पीछे। सोचे ताकत पैदा करेंगे।

फोटोग्राफर : दोस्त, यह सफाई सुनवाई का मौका नहीं है। वक्त तेजी से बदल रहा है। इसकी चपेट मे हम हैं, हम — सिर्फ हम। चीटियों की तरह घर बनाना हमसे नही हो पाता ? (चुप्पी) हमारी एकजुटता में कोई घुसपैठ कर लेता है।

कर्मचारी : तो हमे अपने अनुभवो को परखना होगा।

मजदूर : बहुत सारी चीजें देखना-परखना होगा।

कर्मचारी : जिन्दगी को ठीक जिन्दगी बनाने में रुचि लेना।

मजदूर : रुचि ? पर कैसे ?

फोटोग्राफर : (दर्शकों की ओर इशारा करते हुए) देखो।

कर्मचारी : }
मजदूर : } कहाँ

फोटोग्राफर : सामने लोग—आदमी लोग सामने खड़े हैं—अपने जरूरी

काम छोड कर तुम में रुचि ले रहे है—तुम्हें जान रहे है—कहो, है कि नही ? तुम्हारे शहर की जनता—कितना अच्छा लग रहा है—ऐसा लगता है, वास्तव में है, बहुत बडा परिवार—मर्द है, औरतें हैं, बच्चे है—मैं एक फोटो लूंगा। पीछे देखो तो मस्ती मारते हुए कुत्ता भी है। मुझे फोटो लेना चाहिए—(भावातिरेक। कंधे से कैमरा उतारेगा, ऐसा लगता है)

कर्मचारी : ठहरिये।

फोटोग्राफर : कहो।

कर्मचारी : मैं कौन हूं ?

फोटोग्राफर : अरे ! आदमी और क्या।

मजदूर : और मैं बाबूजी।

फोटोग्राफर : तुम भी !

कर्मचारी/मजदूर : तव हमे भी इस फोटोग्रुप मे होना चाहिए।

फोटोग्राफर : हाँ आओ—सामने तुम लोग भी आ जाओ। यह खुशी की बात है कि तुम लोग अपने को इन लोगों से, समाज से अलग नहीं समझ रहे।

मजदूर : (अचानक ही तेज, पर स्थिर आवाज मे) हे बाबू।

फोटोग्राफर : क्या है ?

मजदूर : बताओ भला चिथाड़बाजी के बाद चिथाड का करेगी ?

फोटोग्राफर : चिथाड माने।

कर्मचारी : प्रोस्टीट्यूड, रंडी।

फोटोग्राफर : हाँ, तो।

मजदूर : वो गले लगा कर कीर्तन नही करेगी—काम होते ही फिंक जायेगी—ओ समाज—ऊमाज खूब जानती है।

फोटोग्राफर : तो।

मजदूर : फालतू बातें बाद में पहले हम ये कहते है बाबू कि हम लफंगे नहीं है—कीड़ा-मकड़ा नही हैं, इसलिए बतलाओ अपने बारे में—

कर्मचारी : आस-पास के बारे मे।

मजदूर : ओ हरामजादे मालिक के बारे में, जो रेजा से लड़ियाता रहता है और ओका मर्द दाँत निपोरता खड़ा रहता है—काहे।

कर्मचारी : इस दुनिया की अजब रीति के बारे में, जिसमें कुछ एकदम अमीर होते जा रहे है—नोटों की ढेरी पर बैठे हैं—दूसरी तरफ लाखों लोगों को अपनी हड्डियाँ बचाना मुश्किल हो रहा है, क्यों ?

मजदूर : (घूमता हुआ सा, चक्कर लगाता सा। क्रमशः तेज और लय में)
अपने बारे में।
तुम्हारे बारे मे।
इनके बारे में।
उनके बारे मे।

कर्मचारी : (वैसे ही) उनके बारे में। हाँ, उनके बारे में।
इनके बारे में—हाँ, इनके बारे मे।
तुम्हारे बारे में—हाँ, तुम्हारे बारे मे।
मेरे बारे मे—हाँ, मेरे बारे मे।
(दर्शकों के बीच से जगह बनाता हुआ और वहीं से संवाद कहते हुए नौजवान आता है। सिगरेट को जूते से मसलता हुआ सामने खड़ा होता है।

नौजवान : चोप ! बिल्कुल चोप।

कर्मचारी : क्यों भाई तुम कौन हो ?

नौजवान : सुन रहा हूँ । बहुत देर से सुन रहा हूँ ! फालतू फंड की बातें नही होना, सच्ची और कारगर चीजें मिलना चाहिए हमें—देखो, बहुत कुछ सीखना है—मुझे तुम्हे भी । मैं भी जानता हूँ कुछ बातें और तुम भी ।

फोटोग्राफर : आगे ।

नौजवान : हम एक दूसरे के दु:ख-सुख सामने रखेंगे । इतिहास की पुरानी बातें हमारे सामने हैं । मानव इतिहास की और आज की । हम इसके सहारे दुनिया को साथ लेकर सोचेंगे कि गलती कहाँ से शुरू होती है ।

कर्मचारी : गलत आदमी कौन है ?

नौजवान : इस दुष्टो के गिरफ्त मे कौन हैं ?

फोटोग्राफर : इन जालिमो के सहायक कौन हैं ?

मजदूर : (खुश होकर ताली बजाते हुए) सजा, फाँसी, कत्ल । हम इन चुरकटों को बाँध कर फाँसी देंगे ।

फोटोग्राफर : (हँस कर मजदूर के कंधे पर हाथ रखता है) उत्तेजित नही होना है । नही, बिल्कुल नही । एक ढंग है, जिसके रास्ते से चलते हुए हम लोग इन दानवों और इनके संगी साथियो को पहचानेंगे । फिर इनके दाँत तोड़ेंगे ।

नौजवान : ईमानदार होंगे । पहले हम अपने लिए, समाज के लिए, संसार के लिए, अपना हक वापिस लेंगे । हमारा हक ।
······(थोड़ी देर का अंतराल)

फोटोग्राफर : सावधान !
सावधान !!
सावधान !!!
(मजदूर, नौजवान और कर्मचारी हाँक लगते ही क्रमशः सावधान हो जाते हैं । फोटोग्राफर घूम-फिर

कर निरीक्षण करता है फिर दर्शकों के सामने सीधा खड़ा होकर कसमें दिलवाता है।)

फोटोग्राफर : ठीक है—अब सिलसिला चालू होता है। तुम्हें तुम्हारी कसम, तुम्हें तुम्हारी माँ की कसम, तुम्हें मेरी कसम। तुम, तुम, तुम और मैं (मजदूर, कर्मचारी और नौजवान की तरफ इशारे) हवा की, पानी की, नमक की, जिन्दगी की कसम खाकर हम कहते हैं कि जो कहेंगे सच कहेंगे और अपने सिवाय कुछ नही रहेंगे।

मजदूर : (विश्राम ! फिर मै बोलूंगा, खूब-खूब बोलूंगा। जिन्दगी भर मुझे दबाये रखा तुम लोगों ने। (उत्तेजित होकर) इन कम्पोंडर बाबू की करतूत सुनोगे (कर्मचारी की ओर इशारा) अस्पताल की मुफ्त दवाई के लिए नोट माँगे थे। (उसी की मुद्रा बनाकर) टेंट में रकम नही है, तो बीमार क्यों पड़ते हो तुम लोग। सीधे मरघटाई क्यों नही चले जाते। मुफ्त नहीं है समझे ! निकालो पैसे या आगे बढ़ो।

नौजवान : इस साले ने ऐसा कहा।

मजदूर : हाँ रकम नही थी ! और इसी के कारण सिरफ इसी के कारण मेरी औरत मर गई। और पेट के अन्दर का बच्चा भी—कैसा होता रे (तीखा विलाप) हे राम रे।

फोटोग्राफर : खामोश ! रोओगे नही ! मैं कहता हूँ सुनो—

कर्मचारी : (जैसे अपने आपसे) क्या मैं मजदूर नहीं था ? धर्मखाते की दवा भले हो, पर पाछे राज क्या है ! किसी को क्या मालूम। बड़े डाक्टर से लेकर मैट्रन तक, सबका हिस्सा है और मैं ? पाँच बच्चों की इच्छायें, मैं डेढ़ सौ मे क्या पूरी कर सकता हूँ ? ईमानदारी कहने से डकार नहीं आती। (चुप्पी) इतने छन्द छन्दों से भी क्या घर की

दीवाल सम्हल रही है? मेरे अन्दर भी कोई चीज बोलती है और मैं ही बेरहमी से उसे खत्म करता हूँ। बहुत सारी चीजें टूटती जा रही हैं (व्यथित और अस्पष्ट हँसी) मैं, बीबी, मुन्ना, फुन्ना, सरू, नीरू, देबू—

मजदूर : (चिढ़ी और रोती आवाज) तेरे तो पाँच बच्चे हैं। मेरी तो औरत गई, तो बच्चा भी।

फोटोग्राफर : आज तुम्हारा दिन है। बोलो कत्ल करोगे इसे।

मजदूर : अंह बाबू! अंह। ये जायेगा तो कोई दूसरा आयेगा। रकम तो जरूरी है। हम ही गाँडू किस्मत लेकर पैदा हुये रहे बाबू (चुप्पी फिर स्थिर आवाज) नहीं हमारी किस्मत नहीं। इसमे चक्कर है, पैसे वालों का चक्कर।

फोटोग्राफर : जो कहना है एक सिरे से कहो।

मजदूर : ठहरिये बाबू। कोई सिरा हो तो कहूँ। अब इन्हें देखिये (नौजवान की ओर इशारा) ये भी कुछ कम नहीं। इन्होंने मेरे छोटे भाई को मारा कुचर-कुचर के। वो गाँव मे है। इनके काका के खेत पर काम करता है। उसने घर बनाने के लिए इनके काका से रुपये लिये थे। समय पर चुका नहीं पाया। चुकाता भी कैसे। नून-तेल के बाद कुछ बचे तो। और इन्हें सबर नहीं।

फोटोग्राफर : मैं क्या सुनता हूँ नौजवान। यह सच है?

नौजवान : बेकारी थी। नौकरी का कोई जुगाड़ नहीं था। पेट भरने या कहूँ किसी तरह समय काटने के लिए गाँव चला गया काका के पास। नमक की अदायगी जरूरी है न, इस दुनिया में! अपनी हैसियत भी भूल गया था। अब उस चकाचौंध से उबर गया हूँ। ये बेहद बुरे और गन्दे दिन थे।

फोटोग्राफर : (मजदूर से) क्या कहते हो ?

मजदूर : (असमंजस) मुझे कुछ सूझता नहीं। कब कौन सही है, कौन गलत। पर सच्ची कहूँ—

फोटोग्राफर : हाँ।

मजदूर : क्या बात है कि चाहे कम्पौंडर बाबू हों चाहे मैं, हरामीपना करके भी मोटे नहीं हो पाए हैं, जैसा हमारा मालिक है।

फोटोग्राफर : तो।

मजदूर : उसका स्वर्ग बनता है। इनका नहीं न। उसके झोले में साली सारी दुनिया पड़ी है। इसलिए कहता हूँ बाबू जी जड़ वही है। हरामजादे।

फोटोग्राफर : तुम समझ रहे हो। ठीक समझ गये हो।

मजदूर : परन्तु बाबू ! बात पूरी नहीं हुई है।

फोटोग्राफर : बोलो।

मजदूर : समझो कि अपनी जिन्दगी कट ही गई। भूखे सो जाने तक की आदत बन गई है। पर अपने आसपास के लोगों को देखता हूँ तो दरद से मन फट जाता है। हम तो खैर कुछ सालों के लिये ही हैं। पर हमारे ये छोटे-छोटे बच्चे कीचट गन्दे बने रहेंगे। हमारी जगह फिर ये ले लेंगे। ले ही लेंगे और क्या। सलेटपाटी की बजाय ईंटगारा में हाथ डालेंगे, तो ससुर और का उखाड़ेंगे। बाबू ! दिमाग से, शरीर से, मेहनत से, ये बड़े लोग हमसे, इसमें भी बड़े हैं न ! हमारे बच्चे भी सीख पढ़ कर गुड्डा बाबा लोगों की ऐसी तैसी कर सकते हैं (व्यंग्य, हाथ मलते हुए) हाँ, हम नालायक हैं, बिल्कुल नालायक। कुछ नहीं कर पाते अपने बच्चों के लिए। और बनते हैं बाप।

कर्मचारी : खुले आसमान के नीचे जिस तरह तुम लोट रहे हो। यह सब पर्दे के भीतर मेरे घर में भी है।

फोटोग्राफर : सिर्फ ये (मजदूर की तरफ) बोले! सब कोई जानते हैं। लोग चेहरे देखकर पहचान जाते हैं कि कौन अपने बड़े भाई का कोट पहना है और किसके घर सिर्फ दाल पक रही है।

मजदूर : और क्या कहूं। जिन्दगी ही गलत चल रही है। इस मालिक की वजह से, जो दो रोटी के लिए सारे दिन पेरता है। दूसरी बातें करना तो दूर, सोच भी नहीं पाते।

फोटोग्राफर : तुमने बच्चों के बारे मे कहा था।

मजदूर : हां।

फोटोग्राफर : तो फिर सोचोगे और थूक दोगे! सोचने से दुनिया बन जाती है? इमारतें खड़ी हो जाती है?

मजदूर : (स्वप्निल होते) नहीं। मैं बच्चों को बतलाऊँगा, उनके मन मे भरूँगा कि इन नंगे शरीरो के कपडे किन हवेलियो में कैद हैं (सामने जैसे बच्चे खड़े हो, उन्हें समझा रहा है) तुम्में दिमाग है, खूब सारा पढ़ सकते हो। पर इन हरामियो की वजह से नहीं पढ़ पाओगे। तुम्हारी मेहनत, सुख चैन ये जब्त कर लेते है। ये बड़ी-बड़ी मशीनो और चिमनी वाले! हां, ये लोग। इनसे हमारा पेट भी पलता है, पर कैसे? ये हमे सिर्फ जिंदा रखना चाहते हैं बस!—(तेजतर होकर) हमें सिर्फ जिंदा नहीं रहना है। इस कारण, हमे इकट्ठा होना है। समझे, तब अपने माफ़िक चल सकेंगे। ये अलग हैं, हम अलग हैं। साले हमारे ही सहारे चलते हैं और

हमारे मुँह पर गिरानी बाँधते है। ये अलग है, एकदम से अलग। यह अच्छी तरह से समझो। (आवाज जम जाती है। बाकी तीनों दर्शकों की ओर उँगली उठाते हैं और चिल्लाते हैं)

फोटोग्राफर : ध्यान धरो।

कर्मचारी : ध्यान धरो।

नौजवान : ध्यान धरो।

(कर्मचारी सामने आ जाता है)

कर्मचारी : पानी की तरह यहाँ सब कुछ साफ है। तो मुझे शुरू हो जाना चाहिए।

नौजवान : गुनाह नहीं बताता इस कारण बहुत सारे ख्वाब देख डाले थे।

मजदूर : क्या, क्या ?

कर्मचारी : अपना घर होगा।

नौजवान : है ?

कर्मचारी : नहीं।

फोटोग्राफर : होना चाहिये।

कर्मचारी : अपनी स्कूटर होगी।

नौजवान : है ?

कर्मचारी : नहीं ?

फोटोग्राफर : होना चाहिए।

कर्मचारी : सुन्दर बीबी होगी। मोटे-ताजे बच्चे होंगे। किलकते और अंग्रेजी में बतियाते।

नौजवान : है ?

कर्मचारी : बीबी तो है, बच्चे तो है।

नौजवान : स्वस्थ, नाचते, कूदते ?

कर्मचारी : नही ।

फोटोग्राफर : होना चाहिए ।

कर्मचारी : (आवेश में) होना चाहिये, होना चाहिये । सारे ख्वाब घुसड़ जाते है, जब खीसों में नोट न हों ।

फोटोग्राफर : तो

कर्मचारी : (कविमय) *ख्वाब जल्दी नही टूटते । टूटते हैं धीरे-धीरे ।* अपना संसार रचाने के लिये सीखा—

नौजवान : क्या ?

कर्मचारी : लीचड़पन । आदमी होने का फायदा उठा कर आदमी को ही ठगने का तरीका ।

मजदूर : तो क्या मिला ?

कर्मचारी : *सालों साल गुजर गये हैं । फर्क कुछ नही आया । जिन्दगी अपने लिये नही जी पाया—*

नौजवान : तो किसके लिये ?

कर्मचारी : मुझे नोंच खाया है सबने मिल कर ।

नौजवान : अरे नही !

कर्मचारी : हां यही नही, लतियाया है, मां ने, बाप ने, बीबी ने, दोस्तो ने । जब जरूरतें पूरी नही कर पाया, तब । फुटबाल की तरह यहां से वहां । वहां से यहां । बस यही होता रहता है ।......भूल गया हूं अपनी असली हंसी । अचरज मत करिये, सच ही कहता हूं । हंसी कुटिलता मे बदल जाती है । प्यार भी तो नही कर पाता ठीक-ठीक । बिजिनेस की तरह हो गया है यह । (अतिरेक) ले नही पाता लोगों को, फूलो को, हवा को, गंध को । *जैसे वे हैं, उन्हें बांध नहीं पाता सही ढंग से ।*

फोटोग्राफर : सुनो ।

मजदूर : सुनो।

नौजवान : सुनो।

(उँगलियाँ दर्शकों की तरफ और क्रमशः तेज आवाज) अब नौजवान आगे आ जाता है। कमीज ठीक करता है सिगरेट सुलगा लेता है।)

नौजवान : मेरी बारी है, इसलिये कहना होगा। परन्तु कहूँ क्या? यूँ अपने बारे में कहना और बहुत हद तक सोचना छोड़ ही दिया। क्या मिलता है? दुःख को सहलाना और फिर उसे गौरव की चीज बना देना। क्या दूसरे, अपने दुःखों के साथ जोड़ कर और वैसा ही समझ कर सिर पर उठा लेंगे? बखान करने से जख्म बढ़ता है, बस। (हँसी) अब इनको देखिये (कर्मचारी की ओर) भावनायें तेज करके मन दुखाते हैं। कलपते है परन्तु कुछ करते नही। कर पाते नही। वही सब कुछ जो इनके साथ हुआ है, वही मेरी जिन्दगी में होगा। घटा नही है, तो घटेगा। जरूर से जरूर (चुप्पी) शायद नही, बिल्कुल पक्का यही आप लोगो के साथ हो रहा होगा। है न?

कर्मचारी : फिर भी कुछ तो कहना ही है।

नौजवान : जब तक पढ़ते थे, बेखबर थे। चूँकि शिक्षा बिना पैसा नही मिलती और शिक्षा से पैसा पैदा नही होता, इसलिये पढ़ाई जरा कम टाइम टेबिल के अनुसार हो हुए है। पढाई के बाद बेकार हुआ। बेकारी मे क्या-क्या होता है बतायेंगे आप? (दर्शकों से ही) नहीं-नही मत बतलाइये। जानता हूँ कि आप जानते हैं। अब नौकरी है। ठीक ही। रोजगार दफ्तर की लम्बी कतार को तो देख कर कहना चाहिए—बहुत अच्छी। परमभाग्य। मूंगफली

छीलते हुए जरा इस लम्बी कतार से मिल आइये। क्या-क्या लन्तरानियाँ होती हैं, फिर थच्च् एक ही मिनिट मे। पहाड़ से एकदम नाले मे! संशय ही इस शिक्षा का प्रसाद है।

कर्मचारी : भई, अपनी निजी जिन्दगी की बात कहो। निजी जिन्दगी।

नौजवान : हे भावुक मन! बहुत बड़ी नही होती आजकल लोगों की अपनी जिंदगी। तुम्ही तो कहते हो—किस तरह जिन्दगी बिछल कर दूसरे की जेब में चली जाती है।

कर्मचारी : फिर भी।

नौजवान : सुनो, बहुत गहरी नहीं होती निजी जिन्दगी। तुम्हारी, तुम्हारी, तुम्हारी (दर्शकों की ओर) तुम्हारी जिन्दगी से जुड़ कर।

फोटोग्राफर : अपनी जिन्दगी से बड़ी है हमारी जिन्दगी। इस तरह हमारा इतिहास।

नौजवान : एक बात पूछूं?

फोटोग्राफर : पूछो।

नौजवान : बार-बार ऐसा क्यों लगता है कि हम यहाँ कुछ सालों के लिए यहाँ आये है और तैमूरलंग की तरह लूटपाट कर चले जायेंगे?

फोटोग्राफर : लूटपाट?

नौजवान : हाँ लूट तो। कितना लूटते हैं एक दूसरे को। कितनी बेकदरी से कितनी बेरहमी से लेते है तमाम चीजों को। जैसे यह दूसरे का ही घर हो।

कर्मचारी : इसके पीछे कौन है?

फोटोग्राफर : यह तुम भी जानते हो। हम सब जानते है। लगाम

उन्ही के हाथों में, जिनके हाथों मे स्टील है, मोटर है, खदान है। तमाम चीजें है।

नौजवान : हाँ, तो।

फोटोग्राफर : शुरुआत यहाँ से होती है। बड़ी लूट। आदमी की मेहनत, आदमी का पैसा, आदमी का खून, आदमी की इज्जत। सभी कुछ।

नौजवान : सभी को खरीद लेते है।

फोटोग्राफर : भविष्य के निर्माण में अपने पुर्जों के साथ ये जग लगा लेते है, ताकि गरीब आदमी का स्वप्न टूटे।

मजदूर : बिल्कुल।

फोटोग्राफर : तुमने कहा था लूटपाट। इनके फल है, यह। तुमने कहा था हम तैमूरलंग की तरह हो जायेंगे। क्योंकि जड़ में ये है।

नौजवान : गुलाम हैं हम क्योंकि पूंजीपतियों का जाल है, पर लूट मे हम भी शामिल हो जाते हैं। देखते ही माल पार करने का मौका नही चूकते। हम ही अपनी खुली हवा को, अपने देश को, अपने आपको दे डाल रहे हैं इसके गन्दे हाथो मे।

(क्रमशः तेजतर आवाज। उँगलियाँ दर्शकों की तरफ)

फोटोग्राफर : सुनो।

कर्मचारी : सुनो।

मजदूर : सुनो।

(फोटोग्राफर आगे आता है)

फोटोग्राफर : हाँ! अब मैं। फोटोग्राफर हूँ। पहले भगवान श्री के पास था। दिव्यमय फोटो उतारना मेरा काम था। फिर नंगी आँखों ने पहचाना। जाना कि ठण्डी और प्यारी

मुद्राओं के पीछे ढोंग है। आध्यात्मिक शांति के थोक वितरक भगवान श्री उनके हैं, जिनका पेट हराम का माल-टाल खा कर गड़बड़ कर रहा है। सबसे बड़ी जरूरत रोटी है। यह सब देखने पर बार-बार महसूस करता रहा।

मजदूर : रोटी ?

फोटोग्राफर : भूखा रोता है तो, उसे रोटी चाहिए कि शांति ?

मजदूर : रोटी।

नौजवान : और सबसे अधिक लम्बी लाइन रोटी वालों की है, जिन्हें ये हारमोनियम बजाकर सुलाना चाहते हैं।

मजदूर : ताकि भूखा गुस्सा न करे।

फोटोग्राफर : हाँ ! सही, बिल्कुल सही। भूखे को रोटी चाहिए रोटी। उसे संभोग करते हुए समाधि तक पहुँचने की फुर्सत नहीं है। मैंने उनका साथ छोड़ दिया। फिर पहाड़ों, फूलों रंगो को फोटो खींचता रहा। पर अब आज से निर्णय लेता हूँ कि उनकी खबर लूँगा, जिनके शरीर पर कपड़े नहीं, धूल है। लोनी लगे मट्टी के घरौंदों की तस्वीर लूँगा, ताकि सबको याद हो सके कि जगमग करते शहर में लोग जानवर की तरह जी रहे हैं। बेबस, लाचार लोग।

मजदूर : ध्यान धरो।

नौजवान : ध्यान धरो।

कर्मचारी : ध्यान धरो।

(फोटोग्राफर फिर आगे आता है)

फोटोग्राफर : अपनी ताकत की पहिचान करनी है।

मजदूर : कौन करेगा ?

नौजवान : सब लोग।

मजदूर : जैसे ?

फोटोग्राफर : जैसे हम लोग।

नौजवान : मजदूर, किसान, नौजवान।

फोटोग्राफर : तुम, मैं, हम (दर्शकों को लेता हुआ) हम सब।

नौजवान : सुनो।

कर्मचारी : सुनो।

मजदूर : सुनो।

फोटोग्राफर : हाँ। हम कण नही हैं। जर्रा नही है। पूरा कपडा हैं। पूरी ईंट हैं।

नौजवान : हाँ हम सब ईंट हैं ईंट।

मजदूर : हम सब हैं एक परिवार के लोग।

कर्मचारी : (याद करता हुआ) आपने कहा था, एक फोटो लेने के लिये। आप फोटो लें।

फोटोग्राफर : नहीं। अभी नहीं। हम फिर मिलेंगे। आज देखो। देखो। फोटो किस तरह खराब आयेगी। कुछ खुश है। कुछ टूटे हुये से है। कुछ तने हुए चेहरे लिये। आगे, हाँ, आगे मैं जरूर आऊँगा। जब सारे चेहरे तने रहेंगे, कुछ कर गुजरने पर आमादा रहेंगे। और उसके बाद फिर आऊँगा—हँसते, खिलखिलाते लोगों को कंधे से कंधा जोड़े नाचते, समूहगान मे शामिल होने। हाँ मुझे उम्मीद करनी चाहिए। मैं फिर आऊँगा। जरूर से जरूर...............।

(फोटोग्राफर रास्ता काटते हुए निकल जाता है। शेष पात्र यहाँ-वहाँ बिखर जाते हैं।)

इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर

कहानी : श्री हरिशंकर परसाई

निर्देशन एवं नाट्य रूपान्तर : तपन बनर्जी

प्रस्तुति : 'विवेचना' जबलपुर

भूमिकाओं में : सीताराम सोनी
राकेश दीक्षित
अरुण पाण्डे
ऋषि सराफ
कमलेश जैन
मुकुंद करकरे
प्रशांत मुले
सुरेश गुप्ता
ओमप्रकाश वर्मा
अजय चौहान
बसंत चतुर्वेदी

(परसाई जी की इस प्रसिद्ध रचना का नाट्य रूपान्तर आँगन मंच को ध्यान में रख कर किया गया है । तकरीबन दस पात्रो के इस नाटक में मातादीन और सूत्रधार की भूमिका निभाने वाले पात्र भी शामिल हैं ।

प्रस्तुत रूप में "विवेचना" जबलपुर इसके पच्चीस से अधिक सफ़ल प्रदर्शन कर चुकी है । यह सिलसिला जारी है ।

रंगकर्मियों की सुविधा के लिये "निर्देश" देने की धृष्टता भी की गई है । पर सहमति आवश्यक नही ।)

(नाटक के प्रारंभ मे मातादीन की भूमिका निबाहने वाले पात्र के सिवा सभी पात्र तेजी से सूत्रधार की अगुआई में मंच पर प्रवेश करते है । पात्र अपनी दायी टाँग के नीचे से दायां हाथ लाकर दायाँ कान पकड़ने की कोशिश करेंगे । इस मुद्रा में तेजी से प्रवेश, कूदने जैसा आभास देगा । सभी पात्र कोरस में "मातादीन चाँद पर" पर दुहराते हुए मंच के चारों ओर चक्कर लगाकर बीचो-बीच आकर रुक जाते है। फिर सब एक साथ ही खड़े होते है । सूत्रधार सबके सामने बीचो-बीच है)

कोरस : वैज्ञानिक कहते है, चाँद पर जीवन नही है ।
(सूत्रधार के अलावा बाकी लोग बैठ जाते है)

सूत्रधार : पर सीनियर पुलिस इंस्पेक्टर मातादीन कहते हैं........
(मातादीन का तेज कड़क चाल के साथ प्रवेश) (हाथ में एक छोटा डंडा भी है)

मातादीन : ये वैज्ञानिक झूठ बोलते हैं, वहाँ हमारे जैसे ही मनुष्यों की आबादी है ।

सूत्रधार : विज्ञान ने हमेशा इंस्पेक्टर मातादीन से मात खाई है । फिंगर प्रिंट विशेषज्ञ कहता रहता है—छुरे पर पाये जाने

वाले निशान मुलजिम की ऊँगलियों के नहीं हैं। पर मातादीन उसे सजा दिला ही देते हैं। मातादीन कहते हैं......

(सूत्रधार साथियों के बीच घुसने की सी कोशिश करता है, जैसे मातादीन से बचना चाहता हो। मातादीन अपना संवाद सूत्रधार की ओर बढ़ते हुए बोलता है)

मातादीन : ये वैज्ञानिक केस का पूरा इन्वेस्टीगेशन नहीं करते। उन्होंने चाँद का हिस्सा देखा और कह दिया, वहाँ जीवन नहीं है। (गर्व से) मैं चाँद का अँधेरा हिस्सा देखकर आया हूँ। वहाँ मनुष्य जाति है।

(संवाद खत्म करते-करते सूत्रधार को एक लात जमाता है। सूत्रधार लुढ़कते हुए दूर चला जाता है। कोरस के बाक़ी लोगों पर डंडे और लातों से हमला कर, उन्हें भगाता है। कोरस जिस तरह से मंच पर आया था, उसी तरह से विपरीत ओर मंच के बाहर निकल जाता है। सूत्रधार मातादीन से छिपने की कोशिश करते हुए दर्शकों के सामने आ कर खड़ा हो जाता है मातादीन मंच के पिछले भाग की ओर जा कर चहलक़दमी करता रहता है)

सूत्रधार : यह बात सही है, क्योंकि अँधेरे पक्ष के मातादीन माहिर माने जाते हैं। पूछा जायेगा इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर क्यों गये थे ? टूरिस्ट की हैसियत से या किसी फरार अपराधी को पकड़ने ? नहीं, वे भारत सरकार की ओर से सांस्कृतिक आ[illegible] [illegible]न के अंतर्ग[illegible]
ने भारत [illegible]
[illegible] खा था [illegible] द सरकार
[illegible] सभ्यता

दिलाने में अवसर सफ़ल नहीं होती। सुना है, आपके यहाँ रामराज है। मेहरबानी करके किसी पुलिस अफ़सर को भेजें, जो हमारी पुलिस को शिक्षित कर दे। गृहमंत्री ने सचिव से कहा......

(दो पात्रों का प्रवेश, जो गृहमंत्री और सचिव हैं। सचिव मंच के बीच में खड़ा रहता है। मंत्री उसके चारों ओर सोचने की मुद्रा मे टहलता रहता है। सूत्रधार तथा मातादीन मंच पर ही रहते है, पर मुख्य दृश्य से परे)

गृहमंत्री : किसी आई० जी० को भेज दो।

सचिव : नहीं सर, आई० जी० नहीं भेजा जा सकता, प्रोटोकॉल का सवाल है। चाँद हमारा एक क्षुद्र उपग्रह है। आई० जी० की रैंक के आदमी को नहीं भेजेंगे।

गृहमंत्री : फिर?

सचिव : किसी सीनियर इंस्पेक्टर को भेज देता हूँ।

(दोनो का प्रस्थान)

सूत्रधार : (ऐलान करने के ढंग से) तो तय किया गया कि हजारो मामलो के इन्वेस्टीगेटिंग ऑफीसर, सीनियर इंस्पेक्टर मातादीन याने अपने डिपार्टमेंट के एम० डी० साहब को चाँद पर भेज दिया जाय।

(कोरस के मंच से बाहर के पात्र बिगुल की ध्वनि निकालते हैं। मातादीन मंच पर सामने आकर सेल्यूट दागता है)

(सूत्रधार के संवाद बोलने का ढंग साधारण हो जाता है) चाँद की सरकार को लिख दिया गया कि आप मातादीन को लेने के लिये पृथ्वी पर यान भेज दीजिये, पुलिस मंत्री ने मातादीन को बुलाकर कहा ...

(पुलिस मंत्री का प्रवेश, पुट्ठे खुजलाते हुए, बोलने का ढंग गँवारू ।
संवाद मातादीन के चारों ओर, तक़रीबन उससे चिपके हुए ही, घूम कर बोलता है ।)

पुलिसमंत्री : (गद्गद् भाव से) तुम भारतीय पुलिस की उज्ज्वल परंपरा के दूत की हैसियत से जा रहे हो, वहाँ ऐसा काम करना, ऐसा काम करना कि सारे अंतरिक्ष मे डिपार्टमेंट की जयजयकार हो, ऐ ऽ ऽ ऽ सी जयजयकार *हो कि पराई मनिस्टर को भी सुनाई पड़ जाये ।*
(गद्गद् भाव लिये बड़बडाता सा पुलिस मंत्री प्रस्थान करता है)

सूत्रधार : मातादीन की यात्रा का दिन आ गया । एक अंतरिक्ष यान अड्डे पर उतरा । (सबसे लम्बा पात्र सीधा खड़ा, उसके पीछे दो पात्र कमर से झुके और लंबे पात्र की कमर बाहरी हाथो से थामे रहेगे और इनके पीछे तीन पात्र कमर से झुके इन दो पात्रो की कमर थामे हुए, यान बनायेंगे, जूँ ऽ ऽ ऽ की आवाज़ के साथ तेज़ी से यान मंच पर प्रवेश करता है और बीचो-बीच रुक जाता है) मातादीन सबसे विदा लेकर यान की ओर बढ़े । (कोरस के बाक़ी पात्र मंच पर किनारे खड़े रहते हैं । मातादीन उनसे हाथ मिलाता व गले मिलता है । "यात्रा मंगल-मय" हो इत्यादि बोला जाता है । मातादीन यान की ओर बढ़ता है) वे कहते जा रहे थे.........

मातादीन : (गाते हुए) प्रविसि नगर कीजै सब काजा, हृदय राखि कौसलपुर राजा (यान के पास पहुँचकर अचानक पलट-कर चिल्लाता है) मुंशी गफ़ूर !

(सूत्रधार या कोई अन्य पात्र ग़फ़ूर या बलभद्दर बन सकता है) (दौड़कर आता है। सेल्यूट ठोंकता है)

ग़फ़ूर : जी पेक्ट सा !

मातादीन : एफ० आई० आर०, रोजनामचे का नमूना रख दिया है ?

ग़फ़ूर : जी पेक्ट सा !

मातादीन : हनुमान चालीसा, सत्यकथा।

ग़फ़ूर : जी पेक्ट सा !

मातादीन : (चिल्लाकर) बलभद्दर (एक पात्र का प्रवेश)

बलभद्दर : हजूर !

मातादीन : एक काम करना। हमारे घर मे जचकी के बखत अपने खटला (पत्नी) को मदद के लिये भेज देना।

ग़फ़ूर : (लपक कर) आप बेफ़िकर रहें पेक्ट सा, मै भी अपने मकान (पत्नी) को भेज दूँगा ख़िदमत के लिये।

मातादीन : (उपेक्षित भाव से) ठीक है, ठीक है। (यान के चारो ओर घूम कर मुआइना सा करता है। फिर यान चालक से, जो कि यान में सबसे आगे का पात्र है, डपट कर कहता है)

मातादीन : क्यो बे, ड्राइविंग लाइसेंस है ?

यानचालक : जी है, साहब !

मातादीन : बत्ती- बत्ती, सब ठीक-ठाक है ?

यानचालक : जी है, साहब !

मातादीन : सब ठीक-ठाक होना चाहिये वर्ना हरामजादे, बीच अंतरिक्ष मे तेरा चालान कर दूँगा।
(यान चालक सकपका जाता है)

यानचालक : हमारे यहाँ आदमी से इस तरह नही बोलते।

मातादीन : (दहाडते हुए) जानता हूँ बे ! तुम्हारी पुलिस कमजोर

है। अभी चलकर उसे ठीक करता हूँ।

(मातादीन यान की दूसरी पंक्ति के एक पात्र का हाथ लंबे पात्र की कमर से हटाकर यान का दरवाजा खोलने का आभास देता है तथा यान में प्रवेश करने का मूकाभिनय करता है। अन्य पात्र का प्रवेश (लगभग हड़बड़ाते हुए गिरते-पड़ते)

पात्र : (सेल्यूट मारकर) पेक्ट सा, पेक्ट सा! अयस्पी (एस० पी०) साहेब के घर मे से कहलवाये हैं कि चाँद से एड़ी चमकाने का पत्थर लेते आइयेगा।

मातादीन : (गद्गद् भाव से) कह देना बाई साब से, जरूर लेता आऊँगा। और सुनो............

(पात्र के कान मे कुछ कहता है और जोर की आवाज के साथ उसका गाल चूम लेता है। पात्र आश्चर्य का भाव लिये गाल पर हाथ रखे वापस चला जाता है)

सूत्रधार : वे यान में बैठे, (मातादीन दूसरी पंक्ति के बीच, उनके कंधो पर सवार हो जाता है। यान चलने लगता है) और यान उड चला। अभी यान पृथ्वी के वायुमंडल के बाहर निकला ही था कि... ...

मातादीन : (चालक से ऊँचे स्वर मे) अबे हॉर्न क्यो नही बजाता ?

चालक : (उच्च स्वर मे) हुजूर, आसपास लाखो मील मे कुछ नही है।

मातादीन : (ऊँचे स्वर में ही डपट कर) मगर रूल इज रूल, हार्न बजाता चल।

(यान के पात्र भोंपू ऽऽऽ भोंपू ऽऽऽ आवाज निकालते है। सूत्रधार के संवाद के दौरान आवाज मद्धिम हो जाती है। फिर तेज हो जाती है)

सूत्रधार : चालक अंतरिक्ष में हॉर्न बजाता यान को चाँद पर उतार लाया (यान बीचों-बीच रुक जाता है साथ ही भोंपू ऽऽऽ भोंपू ऽऽऽ आवाज रुक जाती है।) अंतरिक्ष अड्डे पर पुलिस अधिकारी मातादीन के स्वागत के लिये खड़े थे (यान के पात्र यान तोड़ कर एक लाइन मे खड़े हो जाते है। किनारों के दोनों पात्रो में से एक तिरंगा झंडा और दूसरा चाँद का राष्ट्रीय ध्वज लिये रहते है। 'स्वागतम् शुभ स्वागतम्' का समूह स्वर उठता है, फिर शांत हो जाता है) मातादीन रोब से आगे बढे और उन अफ़सरों के कंधों पर नजर डाली (मातादीन लाइन के एक सिरे से दूसरे सिरे तक सबके कंधो पर नजर फेंकता है और तिरस्कार सूचक ध्वनि करता है) वहाँ किसी के स्टार नहीं थे। फीते भी किसी के नही लगे थे। लिहाजा मातादीन ने एड़ी मिलाना और हाथ उठाना जरूरी नही समझा। फिर उन्होने सोचा, मैं यहाँ इंस्पेक्टर नही, सलाहकार की हैसियत से आया हूँ (मातादीन की ओर उन्मुख होकर) आइये साहब! (ऐसा प्रतीत होता है जैसे सूत्रधार, मातादीन को लाइन में खड़े पुलिस अफ़सरों से परिचय कराने के लिये ले जा रहा हो। अफसर अपने-अपने हाथ मिलाने के लिये बढ़ाये रहते हैं, पर मातादीन उन बढे हुए हाथो पर ध्यान दिये बग़ैर, लाइन के बीच से कट कर मंच के बाहर निकल जाता है। अफ़सर हत-प्रभ से एक बार अपने हाथों, फिर जाते हुए मातादीन की ओर देखते हैं, फिर मातादीन के पीछे-पीछे ही मंच के बाहर निकल जाते हैं, सूत्रधार मंच पर अकेला रह जाता है)

सूत्रधार : मातादीन को वे लोग लाइन मे ले गये और एक अच्छे

बंगले में उन्हें टिका दिया। एक दिन आराम करने के बाद मातादीन ने काम शुरू किया (आगे-आगे मातादीन पीछे-पीछे कोरस का प्रवेश, मातादीन सब ओर निरीक्षण सा करता रुकता चलता है, कोरस साथ ही है) सबसे पहले उन्होंने पुलिस लाइन का मुलाहज़ा किया। शाम को उन्होने आई० जी० से कहा (सूत्रधार समेत सभी पात्र, केवल मातादीन को छोड़ कर, पंक्तिबद्ध खड़े हो जाते हैं) आपके यहाँ पुलिस लाइन में हनुमानजी का मंदिर नही है? हमारे रामराज मे हर पुलिस लाइन में हनुमान जी है।

एक पात्र
(आई० जी०) . जी, हनुमान जी कौन थे, हम नही जानते।

मातादीन : (व्यंग्यपूर्ण हँसी के साथ) नही जानते? (गंभीर होकर) अरे हनुमानजी का दर्शन हर कर्त्तव्य परायण पुलिसवाले के लिये जरूरी है, समझे। हनुमान सुग्रीव के यहाँ स्पेशल ब्रांच में थे। उन्होंने माता सीता का पता लगाया था, एन्डक्शन का मामला था, दफा 361। हनुमान जी ने रावण को वही सजा दे दी। उसकी प्रॉपर्टी में आग लगा दी। पुलिस को यह अधिकार होना चाहिये कि अपराधी को पकड़ा और वहीं सजा दे दी। अदालत में जाने का झंझट ही नहीं। (गहरी साँस खींच कर) मगर यह सिस्टम अभी हमारे रामराज में भी चालू नही हुआ। खैर, हनुमान जी के काम से भगवान रामचंद्र बहुत खुश हुए, वे उन्हे अपने साथ अयोध्या ले आये और टौन ड्यूटी पर तैनात कर दिया, वही हनुमान हमारे आराध्य देव हैं। (जेब से तस्वीर निकालने का मूकाभिनय) मैं उनकी फोटू लेता आया हूँ। उससे मूर्तियाँ बनवाइये और हर पुलिस लाइन में

आप देखेंगे कि पहली घटी हुई तनख्वाह पाते ही आज की पुलिस की मनोवृत्ति में क्रांतिकारी परिवर्तन हो जायगा।

(पुलिस मंत्री और मातादीन आपस में बातें करते हुए एक ओर हो जाते हैं)

सूत्रधार : पुलिस मंत्री ने तनख्वाहें घटा दीं और तीन महीनों में सचमुच बहुत क्रांतिकारी परिवर्तन हो गया। पुलिस एकदम मुस्तैद हो गई सोते से एकदम जग गई। अपराधियों की दुनिया में घबराहट छा गई (एक पात्र अपराधियों को ढकेलता हुआ मंच पर लाता है। अपराधी जोड़ों में है। पीठें आपस में मिली और हाथों से परस्पर एक दूसरे को बाँधे हुए है। मंच पर आ कर तिरछे खड़े हो जाते हैं) पुलिस मंत्री ने तमाम थानों के रिकार्ड बुलवा कर देखे। पहले से कई गुना अधिक केस रजिस्टर हुए थे। प्रभावित पुलिस मंत्री मातादीन से बोले......

पुलिस मंत्री : मैं आपकी सूझ को तारीफ करता हूँ। आपने क्रांति कर दी। पर यह सब हुआ किस तरह?

मातादीन : (पुलिस मंत्री की पीठ थपथपा कर) बात बहुत मामूली है। कम तनख्वाह दोगे, तो इन्स्पेक्टर की गुजर नहीं होगी। सौ रुपये में सिपाही अपने को नहीं पाल सकता। दो सौ में इंस्पेक्टर [illegible] कर सकता है? नहीं। इसके लिए उसे ऊपरी आमदनी करनी ही पड़ेगी। और ऊपरी आमदनी तभी होगी, जब वह अपराधी को पकड़ेगा [illegible] रखेगा। [illegible]

हमारे रामराज के स्वच्छ और सक्षम प्रशासन का यही रहस्य है।

(अपराधियों के जोड़े, उन्हें लाने वाला, मुंशी इत्यादि मंच के बाहर निकलते हैं, पीछे-पीछे मातादीन और पुलिस मंत्री आपस में बातें करते हुए जाते हैं। सूत्रधार मंच पर अकेला रह जाता है। उसके संवाद के दौरान ही मातादीन मंच पर वापिस आ जाता है)

सूत्रधार : चंद्रलोक में इस चमत्कार की खबर फैल गई। लोग दूर-दूर से मातादीन को देखने आने लगे कि वह आदमी है कैसा, जो तनख्वाह कम करके सक्षमता ला देता है। पुलिस के लोग भी खुश थे, वे कहते......

(कोरस "गुरू महाराज" का नारा लगाता हुआ दौड़ कर आता है और मातादीन को साष्टांग दण्डवत करता है, सूत्रधार भी शामिल हो जाता है)

कोरस : आप यहाँ न पधारते तो हम सब कोरी तनख्वाह पर ही गुज़र करते रहते (कोरस के कुछ लोग मातादीन के पाँव दबाते रहते है)

मातादीन : (हाथ फैला देता है। कुछ लोग हाथ भी दबाते है) ठीक है, ठीक है। और मुस्तैदी से काम कीजिये।

(कोरस और मातादीन का प्रस्थान, सूत्रधार रह जाता है)

सूत्रधार : आधी समस्या हल हो गई। पुलिस अपराधी पकड़ने लगी थी। अब मामले की जाँच विधि में सुधार करना रह गया था। कि अपराधी को पकड़ने के बाद उसे सज़ा कैसे दिलाई जाय। मातादीन इंतज़ार कर रहे थे कि कोई बड़ा केस हो जाय, तो नमूने के तौर पर

स्थापित करवाइये (एक पात्र आगे बढ़ कर मातादीन के हाथ से तस्वीर लेने का माइम करता है। बाक़ी पात्र अपनी जगह न छोड़ते हुए तस्वीर देखने की कोशिश करते है)

सूत्रधार : (पंक्ति से बाहर निकल कर) थोड़े ही दिनों में चांद की हर पुलिस लाइन में हनुमान जी स्थापित हो गये।
(मातादीन और सूत्रधार के अलावा सभी पात्र मंच पर तिरछी लाइन बना लेते हैं। लाइन के आगे थोड़े फासले पर मातादीन कंधे पर डंडा रखे और मूंछें उमेठते खडे है। पीछे थोड़े फासले पर सूत्रधार है। कोरस गाता है)

कोरस : दुष्ट दलन रघुनाथ कला की, आरति कीजै हनुमान लला की।

सूत्रधार : बोलो पवनसुत हनुमान की

कोरस : जय! (जय बोलते हुए कोरस झुकता है, मातादीन कंधे पर डंडा रखे और मूंछे उमेठते हुए ही पलटते हैं। प्रतीत होता है जैसे कि मातादीन ही साक्षात् हनुमान जी हैं। सूत्रधार को छोड़ कर बाक़ी पात्र मंच से चले जाते हैं।)

सूत्रधार : मातादीन जी उन कारणों का अध्ययन कर रहे थे, जिनसे पुलिस लापरवाह और अलाल हो गई है। वह अपराधों पर ध्यान नहीं देती। कोई कारण नहीं मिल रहा था। समस्या मुंह बाये सी खड़ी थी और दिनो-दिन मुँह फाड़ती जाती थी। मातादीन परेशान थे कि अचानक उनकी बुद्धि में एक चमक आई.........
(सूत्रधार के संवाद के दौरान ही मातादीन और एक पात्र जो मुंशी का अभिनय कर रहा है। मंच पर उपस्थित हो जाते हैं। मातादीन नाक में उँगली घुमाते हुए सोचने की मुद्रा में टहलते रहते हैं)

मातादीन : (झटके से) मुंशी!

मुंशी : जी साब !

मातादीन : जरा तनखा का रजिस्टर लाओ।

(मुंशी मंच के पिछले भाग मे पहुंचता है, उसकी हरकतों से लगता है मानों रजिस्टर बहुत ही भारी है। सूत्रधार की ओर याचक नजरों से देखता है। सूत्रधार उसकी परेशानी को समझ उसके पास जाता है। रजिस्टर बमुश्किल कांखते-हांफते मातादीन तक ले कर आता है। इस प्रयास में संतुलन रखने के लिये पीछे की ओर झुका सा रहता है। सूत्रधार पीछे से उसके पुट्ठों पर इस तरह से टेक लगाये रहता है मानो इसके अभाव में मुंशी पीछे ही गिर पड़ेगा। मातादीन वह रजिस्टर आसानी से उठा लेते हैं। एक सरसरी नजर रजिस्टर पर डालते हैं। फिर फेंक देते हैं। इसी दौरान एक पात्र, जो पुलिसमन्त्री है, का प्रवेश। मातादीन उसकी ओर मुखातिब।)

मातादीन : मैं समझ गया आपकी पुलिस मुस्तैद क्यों नही है। आप इतनी बड़ी-बड़ी तनख्वाहें देते हैं, इसीलिये (व्यंग्य से) सिपाही को पांच सौ, हवलदार को सात सौ, इंस्पेक्टर को हजार यह क्या मजाक है। आखिर पुलिस अपराधी को पकड़े ही क्यो ? (गर्व से) हमारे यहाँ सिपाही को सौ और इंस्पेक्टर को दो सौ देते हैं, तो वे चौबीस घंटे जुर्म की तलाश मे रहते हैं। (आदेशात्मक लहजे मे) आप तनख्वाहें फौरन घटाइये।

पुलिस मंत्री : (हल्का सा विरोध का स्वर) मगर यह तो अन्याय होगा, अच्छा वेतन नही मिलेगा तो वे काम ही क्यों करेंगे ?

मातादीन : (एक पल को घूर कर देखता है, फिर पुलिस मंत्री की नादानी पर हँसता है) इसमें कोई अन्याय नहीं है।

भला आदमी : मैं गया नही । मेरा मकान वहीं है ।

मातादीन : अबे वो तो ठीक है, पर झगड़े की जगह जाना ही क्यो ?

भला आदमी : मैं, मैं (हकला जाता है, मातादीन उसे दुतकार कर एक झापड़ मारता है)

सूत्रधार : इस तर्क प्रणाली से पुलिस के लोग बहुत प्रभावित हुए । अब मातादीन ने इन्वेस्टीगेशन का सिद्धान्त समझाया ।

मातादीन : (कड़क चाल से टहलता हुआ पुलिसवालो को समझाता है) देखो आदमी मारा गया है, तो यह पक्का है कि किसी ने उसे जरूर मारा है, कोई । कातिल है किसी को सजा होनी है । सवाल है—किसको सजा होती है ? पुलिस के लिये यह सवाल इतना महत्व नही रखता, जितना यह कि जुर्म किस पर साबित हो सकता है, या किस पर साबित होना चाहिये । कत्ल हुआ है, तो किसी मनुष्य को सजा होगी ही । मारने वाले को होती है, या बेकसूर को यह अपने सोचने की बात नही है । मनुष्य-मनुष्य सब बराबर है । सबमें उसी परमात्मा का अंश है । हम भेदभाव नही करते । यह पुलिस का मानवतावाद है । क्या है ।

कोरस : मानवतावाद ।

मातादीन : सवाल नं० 2 किस पर जुर्म साबित होना चाहिये । इसका निर्णय इन दो बातों से होगा—नं० 1, क्या वह आदमी पुलिस के रास्ते मे आता है ? नं० 2, क्या उसे सजा दिलाने से ऊपर के लोग खुश होंगे ?

(कोरस स्तब्ध मौन) नही समझे ? अच्छा इस आदमी के बारे में बताओ ।

एक पात्र : यह भला आदमी है (मातादीन) ध्यान से सुनता हुआ

इस पात्र की ओर बढ़ता है) पर पुलिस अन्याय करे तो विरोध करता है। जहाँ तक ऊपर के लोगों का सवाल है—यह वर्तमान सरकार की विरोधी राजनीति वाला है।

मातादीन : (एकदम चमक कर खुश होता है) गुड ! फर्स्ट क्लास केस ! पक्का एविडेंस और ऊपर का सपोर्ट।

अन्य पात्र : पर हमारे गले यह बात नहीं उतरती कि एक निरपराध भले आदमी को सजा दिलाई जाय।

मातादीन : (इस नादानी की बात पर हँसता है). देखो मैं समझा चुका हूँ कि सबमें उसी ईश्वर का अंश है। सजा इसे हो या क़ातिल को, फाँसी पर तो ईश्वर ही चढ़ेगा न ! फिर तुम्हें कपड़ों पर खून मिल रहा है। इसे छोड़ कर तुम कहाँ खून ढूंढते फिरोगे ? तुम तो भरो एफ० आई० आर० (भले आदमी को अन्य पुलिसवालों की ओर धकेल देता है) इसे ले जाओ और बन्द कर दो।

(पुलिस वाले भले आदमी को खींचने ले जाते हैं, वह अमर प्रतिरोध करता है। पर चलती नहीं) और सुनो एफ०आई०आर० में वक्त जरूरत के लिए खाली जगह छोड़ देना।

सूत्रधार : चन्द्रलोक में हड़कम्प मच गया। चारो तरफ भुनभुनाहट होने लगी। फिर यह भुनभुनाहट शोर में बदल गई। (नेपथ्य में शोरगुल धीरे-धीरे तेज होता है। "पुलिस हमारी रक्षक है या भक्षक" "आप लोगों को शर्म आनी चाहिये" इत्यादि आवाजें उभरती हैं। शोर हल्का होता है और चलता रहता है।) मातादीन तो यमराज की कर्तव्यपरायणता के बूते पर निश्चित थे। (माता-

उसका 'इन्वेस्टीगेशन' कर बतायें ।

एक दिन............

(नेपथ्य में शोरगुल सुन कर सूत्रधार उस ओर बढ़ता है । अचानक मारो-मारो की आवाजें और फिर एक मर्मान्तक चीख । इस चीख को सुनकर सूत्रधार घबरा कर वापस भागता है और मंच के बीचो-बीच आ जाता है । एक क्षण को निस्तब्धता)

सूत्रधार : आपसी मारपीट में एक आदमी मारा गया । (एक क्षण के अंतराल के बाद) मातादीन कोतवाली में आ कर बैठ गये और बोले......

(मातादीन और कोरस—केवल एक पात्र को छोड कर —मंच पर तेजी से आते है । कोरस फैल कर खडा हो जाता है। सूत्रधार भी कोरस में शामिल हो जाता है)

मातादीन : नमूने के तौर पर इस केस का "इन्वेस्टीगेशन" मैं करता हूँ, आप लोग सीखिये । यह क़त्ल का केस है । क़त्ल के केस में एविडेंस बहुत पक्की होना चाहिये । क्या पक्का होना चाहिये ?

कोरस : "एविडेंस"

मातादीन : गुड

एक पात्र : लेकिन पहले कातिल का पता लगाया जायगा, तभी तो "एविडेंस" इकट्ठा की जायेगी ।

मातादीन : (उस पात्र की ओर बढ़ते हुए) नहीं ऽऽऽऽ । उल्टे मत चलो । पहले "एविडेंस" देखो क्या कहीं खून मिला है ? किसी के कपडों पर या कहीं और ?

दूसरा पात्र : हाँ, मारने वाले तो भाग गये थे, मृतक सड़क पर बेहोश पड़ा था एक भला आदमी वहाँ रहता है । उसने मृतक

को उठा कर अस्पताल पहुँचाया। उस भले आदमी के कपड़ों पर खून के दाग लग गए है।

मातादीन : उसे फ़ौरन गिरफ्तार करो।

तीसरा आदमी : मगर उसने तो मरते हुए आदमी की मदद की थी?

मातादीन : वह सब ठीक है, पर तुम खून के दाग ढूँढने और कहाँ जाओगे? जो एविडेंस मिल रहा है, उसे तो कब्जे में करो?

(कोरस के कुछ पात्र बाहर जाते हैं और सूत्रधार के संवाद के दौरान जो पात्र बाहर रह गया है उसे ला कर मातादीन के सामने पटक देते है (मातादीन उसे बाल पकड़ कर उठाता है)

सूत्रधार : वह भला आदमी पकड़ कर बुलवा लिया गया। बेचारा हक्का-बक्का।

मातादीन : हूँ! तो तुम हो।

भला आदमी : मुझे क्यों पकड़ बुलवाया है आपने? मैंने तो मरते आदमी को अस्पताल भिजवाया था। मेरा क्या कसूर है?

सूत्रधार : चाँद की पुलिस उस आदमी की बात से एकदम प्रभावित हुई। मातादीन नहीं हुए। सारा पुलिस महकमा उत्सुक था कि अब मातादीन क्या तर्क निकालते हैं।

मातादीन : (भले आदमी से) पर तुम झगड़े की जगह गये क्यों?

भला आदमी : मैं झगड़े की जगह गया नहीं। मेरा वहाँ मकान है। झगड़ा मेरे मकान के सामने हुआ।

सूत्रधार : अब फिर मातादीन की प्रतिभा की परीक्षा थी। सारा महकमा उत्सुक देख रहा था।

मातादीन : मकान है तो ठीक है। पर मैं पूछता हूँ, तू झगड़े की जगह गया ही क्यों?

जहाँ जरूरत हुई उन्हें चश्मदीद बना दिया। (गर्व से) हमारे यहाँ ऐसे आदमी है, जो साल मे तीन-चार सौ वारदातों के चश्मदीद गवाह होते है। हमारी अदालतें भी मान लेती हैं, कि इस आदमी में कोई दैवी शक्ति है, जिससे वह जान लेता है कि अमुक जगह वारदात होने वाली है और वहाँ पहले से पहुँच जाता है। मैं तुम्हें चश्मदीद बना कर देता हूँ। जाओ और आठ-दस उठाईगीरों को उठा लाओ जो चोरी, मारपीट, गुंडागर्दी करते हों। जुआ खिलाते हों या शराब उतारते हों। जल्दी (कोरस के पावों को धक्का देता है। सब गिरते-पड़ते भागते हैं) (केवल कोतवाल का अभिनय करने वाला पात्र मंच पर रह जाता है) और सुनो (कोरस भागते-भागते रुक जाता है) याद रखो! परिश्रम के अलावा और कोई रास्ता नहीं।

(कोरस मंच के बाहर निकल जाता है और गोल घेरे में एक दूसरे को हाथ से फँसा कर गिरते-पड़ते मंच पर प्रवेश करता है, आभास होता है, जैसे सबको एक साथ ही बाँध कर धक्का देते हुए लाया जा रहा है)

सूत्रधार : कुछ ही घंटों मे शहर के कुछ नररत्न कोतवाली मे हाजिर थे। मातादीन उन्हें देख कर गद्गद हो गये। बहुत दिन हो गये थे ऐसे लोगो से मिले हुए। बड़ा सूना-सूना लग रहा था। मातादीन का प्रेम उमड़ पड़ा।

(अपराधी बंधन खोल कर खड़े हो जाते हैं। सूत्रधार के संवाद के दौरान ही मातादीन किसी को प्यार से चपत, किसी को गाल पर हाथ इत्यादि मुस्कुराते हुए करते हैं)

मातादीन : क्यों भाई कैसा चल रहा है धंधा पानी।

अपराधी : (एक साथ) ठीक-ठाक है साहब, आपकी दया है।

मातादीन : हूँ, तो तुम लोगों ने उस आदमी को लाठी मारते देखा था न ?

अपराधी : (एक साथ) नहीं देखा साब ! हम वहाँ थे ही नहीं।

मातादीन : नहीं थे, मैंने माना, पर लाठी मारते देखा तो था। (अपराधी मातादीन की इस असंगत बात पर मुँह दबा कर हँसते हैं)

मातादीन : (गुस्सा हो कर) हँसो मत, जवाब दो। (हँसी एकदम रुक जाती है)

अपराधी : जब थे ही नहीं तो कैसे देखा ?

मातादीन : कैसे देखा, तो बताता हूँ (बोलते-बोलते मंच के किनारे आ जाता है) तुम लोग जो काम करते हो (कोतवाल की ओर इशारा करके) वह सब यहाँ दर्ज है, एक-एक को कम से कम दस साल जेल में डाला जा सकता है। तुम लोग यह काम आगे भी करना चाहते हो या जेल जाना चाहते हो ?

अपराधी : (सब दौड़ कर मातादीन के चरण पकड़ लेते हैं) साब ! हम जेल नहीं जाना चाहते।

मातादीन : (एक अपराधी को बालों से उठाते हुए) तो तुम लोगों ने उस आदमी को लाठी मारते देखा। देखा न ! (एक-एक करके अपराधी पाँच खड़े होते जाते हैं और एक-एक संवाद बोलते जाते हैं)

अपराधी एक : देखा साब !

अपराधी दो : वह आदमी घर से निकला

अपराधी तीन : और जो लाठी मारना शुरू किया

अपराधी चार : तो वह बेचारा बेहोश होकर

अपराधी पाँच : सड़क पर गिर पड़ा।

दीन आराम से टहल रहा है) पर चाँद की पुलिस को पसीना आने लगा दूसरे ही दिन......
(कोरस के पात्र दौड़ कर आते हैं और मातादीन के चारों ओर "गुरुदेव" कहते हुए घुटनों के बल बैठ जाते है)

कोरस : हमारी तो बड़ी आफत है (कोरस बैठा रहता है)
(एक-एक कर पात्र खड़े होते जाते है, अपने-अपने सवादों के साथ)

पहला पात्र : तमाम भले आदमी आते है और कहते है।

दूसरा पात्र : उस बेचारे बेक़सूर को क्यो फँसा रहे हो ?

तीसरा पात्र : ऐसा तो चन्द्रलोक मे कभी नही हुआ।

चौथा पात्र : बताइये हम क्या जवाब दें ?

बाकी पात्र : (साथ में पहले से खड़े पात्र भी बोलेंगे) हम तो बडे शर्मिन्दा है।

मातादीन : घबराओ मत। शुरू-शुरू में इस काम मे आदमी को शर्म आती है, बाद मे तो तुम्हें बेकसूर को छोड़ने मे शर्म आयेगी बेटा! हर सवाल का जवाब है। अब तुम्हारे पास जो आए, उससे कह दो, हम जानते है कि वह निर्दोष है। पर हम क्या करें? यह सब ऊपर से हो रहा है।

एक पात्र : तब वे एस०पी० के पास जायेंगे।

मातादीन : एस०पी० भी कह दें कि ऊपर से हो रहा है

दूसरा पात्र : तब वे आई०जी० के पास शिकायत करेंगे

मातादीन : आई०जी० भी कहे कि यह सब ऊपर से हो रहा है

तीसरा पात्र : तब वे लोग पुलिस मंत्री के पास पहुँचेंगे

मातादीन : पुलिस मंत्री भी कहेंगे—"भैया मैं क्या करूँ ? यह ऊपर से हो रहा है।"

चौथा पात्र : तो वे प्रधान मंत्री के पास जायेंगे

मातादीन : प्रधान मंत्री भी कहें "मैं जानता हूँ, वह निर्दोष है। पर हम क्या करें। यह सब ऊपर से हो रहा है।"

कोरस : तब वे......

मातादीन : तब क्या ? तब वे किसके पास जायेंगे। भगवान के पास न ? मगर भगवान से पूछ कर कौन लौट सका है। (कोरस निस्तब्ध। मातादीन गम्भीर होकर) एक मुहावरा "ऊपर से हो रहा है।" क्या ?

कोरस : "ऊपर से हो रहा है"

मातादीन : हमारे देश में सरकारो को छत्तीस सालो से बचा रहा है। तुम इसे सीख लो अब जाओ और पाँच-छः चश्मदीद गवाह ले कर आओ।

एक पात्र : चश्मदीद गवाह कैसे मिलेंगे ? जब किसी ने उसे मारते देखा ही नहीं, तो चश्मदीद गवाह कोई कैसे होगा ?

मातादीन : (झल्ला उठता है। घेरे से बाहर निकलते हुए) किन बेवकूफों के बीच फँसा दिया गवर्नमेंट ने। इन्हे तो ए०बी०सी०ई० भी नही आतो। (पलट कर गुस्से में चिल्लाते हुए कोरस की ओर बढ़ता है। कोरस के पात्र घबरा कर एक कोने पर एक दूसरे में दुबके हुए झुंड बना लेते है) चश्मदीद गवाह वह नही, जो देखे—बल्कि वह है, जो कहे कि मैंने देखा।

कोरस : (साहस बटोरकर) लेकिन ऐसा कोई क्यों कहेगा ?

मातादीन : (दहाड़ कर) कहेगा। समझ में नही आता कैसे डिपार्टमेंट चलाते हो भैया (सिर पकड़ कर बैठ जाता है फिर ऊँची आवाज मे ही पर समझाने के लहजे में) अरे ! चश्मदीद गवाहो की लिस्ट पुलिस के पास पहले से रहती है।

रास्ता दिखा रहा हो, जीप के पास तक लाता है । सूत्रधार की फैली हँथेलियों पर पाँव जमा कर मातादीन जीप पर सवार हो जाते है ।) वे फूलो से लदी खुली जीप पर बैठे थे । आस-पास जयजयकार करती हजारों की भीड (जीप चलने लगती है । सूत्रधार और बाकी पात्र मिल कर 'मातादीन जिन्दाबाद', 'भारत सरकार जिन्दाबाद' के नारे लगाते हैं) वे अपने गृहमंत्री की स्टाइल में हाथ जोड़ कर लोगों के अभिवादन का जवाब दे रहे थे । (जिन्दगी में पहली बार ऐसा कर रहे थे इसलिये बडा अटपटा लग रहा था। (मातादीन की हरकतें सूत्रधार की बात का प्रमाण देती है) पुलिस में सिपाही की हैसियत से भरती होते वक्त किसने सोचा था कि एक दिन दूसरे लोक में उनका ऐसा अभिनंदन होगा । (जिन्दाबाद के नारे) वे पछताये—(मातादीन चिंतित मुद्रा में) अच्छा होता इस मौके के लिये कुर्ता, धोती, टोपी लेते आते (जिन्दाबाद के नारे, मातादीन हड़बड़ा कर चैतन्य) भारत के पुलिस मंत्री टेलीविजन पर यह दृश्य देख रहे थे और सोच रहे थे, मेरी सद्भावना यात्रा के लिये वातावरण तैयार हो गया (जिन्दाबाद के नारे । जीप और उस पर सवार मातादीन मंच के बाहर)

(कुछ क्षणो का विराम, पात्र दो बार संसद बनाते हैं । अबकी बार मातादीन नही हैं)

सूत्रधार : एक दिन चाँद की संसद का विशेष अधिवेशन बुलाया गया । बड़ा तूफान खड़ा हुआ (संसद में शोर सा उठता है, कम हो जाता है) गुप्त अधिवेशन था, इसलिये रिपोर्ट प्रकाशित नही हुई । पर संसद की दीवारो से टकरा कर

कृपा करके बाहर आवें। (सूत्रधार संसद की ओर मुँह करके खड़ा हो जाता है। एक-एक आरोप पर एक-एक कदम पीछे हटता जाता है)

संसद का

एक पात्र : कोई बीमार बाप का इलाज नहीं करवाता।

दूसरा पात्र : डूबते बच्चों को कोई नहीं बचाता।

तीसरा पात्र : जलते मकान की आग कोई नहीं बुझाता।

चौथा पात्र : आदमी जानवर से बदतर हो गया।

सभी पात्र : सरकार फौरन इस्तीफा दे, सरकार फौरन इस्तीफा दे। (संसद के पात्र एक जुलूस बनाते हैं। प्रधानमंत्री आगे-आगे पीछे अन्य पात्र)

सूत्रधार : दूसरे दिन चाँद के प्रधानमंत्री ने मातादीन जी को बुलाया, (मातादीन का प्रवेश) मातादीन ने देखा—वे एकदम बूढ़े हो गये थे। लगा कई रातें सोये नहीं हैं। रुँआसे हो कर प्रधानमंत्री ने कहा।

प्रधानमंत्री : मातादीन जी, हम आपके और भारत सरकार के बहुत आभारी हैं। अब आप कल देश वापिस लौट जाइये।

मातादीन : नहीं सर, मैं तो टर्म खत्म करके ही जाऊँगा।

प्रधानमंत्री : हमारा सिद्धांत है सर, हमें पैसा नहीं काम प्यारा है। (मातादीन और प्रधानमंत्री मय साथियों के, विपरीत दिशाओं से मंच छोड़ते हैं)

सूत्रधार : लाचार हो कर चाँद के प्रधानमंत्री ने भारत के प्रधानमंत्री को एक गुप्त पत्र लिखा। चौथे दिन मातादीन जी को वापस लौटने के लिये अपने डी० आई० जी० का आर्डर मिल गया।

(यान का प्रवेश, मातादीन यान में बैठ जाते हैं)

मातादीन : (अगर कोई पात्र बचा हो तो उसे भी बालों से पकड़ कर उठाते हुए) आगे भी ऐसी वारदातें देखोगे ।

अपराधी : (एक साथ) साब, जो आप कहेंगे, सो देखेंगे ।
(कोतवाल बेहोश होकर गिर पड़ता है, सारे अपराधी उसे घेर लेते हैं । उत्सुकता से देखते हैं कि माजरा क्या है)

सूत्रधार : इस चमत्कार को देख कर कोतवाल थोड़ी देर के लिये बेहोश हो गया । (कोतवाल गिरते पड़ते जा कर मातादीन के पैरों से लिपट जाता है) होश आया तो मातादीन के चरणों पर गिर पड़ा । बोला…………

कोतवाल : मैं जीवन भर इन श्रीचरणों में पड़ा रहना चाहता हूँ ।

मातादीन : हटो यार, काम करने दो (इशारा करता है । सूत्रधार के अलावा पात्र आगे बढ़ कर कोतवाल को उठाते है और बाहर ले जाते हैं, मातादीन दूसरी ओर से बाहर निकल जाता है)

सूत्रधार : मातादीन ने आगे की सारी कार्यप्रणाली तय कर दी । एफ० आई० आर० बदलना, बीच मे पन्ने डालना, रोजनामचा बदलना, गवाहों को तोड़ना सब सिखा दिया । उस आदमी को बीस साल की सजा हो गई। (दो पात्र भले आदमी को टाँगों से घसीट कर मंच पर लाते है, भला आदमी हाथो के बल चल रहा है । बाकी पात्र कुछ अंतर से हैं । मंच पर एक लंबा चक्कर लगा कर सभी बाहर निकल जाते है)

सूत्रधार : चाँद की पुलिस शिक्षित हो चुकी थी। धड़ाधड़ केस बनने लगे और सजा होने लगी । चाँद की सरकार बहुत खुश थी । पुलिस की ऐसी मुस्तैदी भारत सरकार के सहयोग

का नतीजा थी। चाँद की संसद ने एक धन्यवाद प्रस्ताव पास किया।

(सारे पात्र मंच पर प्रवेश करते हैं। दो पंक्तियों में, जिनके मुँह आमने-सामने हैं, खड़े हो जाते हैं। बीच में प्रधान-मंत्री का अभिनय करने वाला पात्र। सूत्रधार शामिल हो जाता है)

प्रधानमंत्री : मातादीन जी की इस सेवा के लिये हम उनके और भारत सरकार के बहुत आभारी हैं। चाँद की जनता की ओर से हम उन्हें धन्यवाद देते हैं। (तालियाँ) धन्य है वह भूमि जिसने मातादीन जी जैसे हीरे को जन्म दिया (तालियाँ)

(मातादीन खड़े होते हैं)

मातादीन : आपने मुझ तुच्छ पत्थर के टुकड़े को हीरा कहा यह मेरे और भारत सरकार के पुलिस विभाग के लिये गौरव का विषय है। इस पवित्र अवसर पर जब आपका प्रेम देख कर मेरा हृदय भर आया है, मैं केवल इतना ही कहूँगा कि धन्यवाद की असली हक़दार रामराज्य की वह व्यवस्था है जिसने मुझ पत्थर के टुकड़े को तराश कर, हीरा बनाया है। (तालियाँ) (संसद का दृश्य तोड़ कर चार पात्र अगले दृश्य में जीप बनाने के लिये) इस तरह कमर से झुकते है कि उनकी पीठें समतल मे हो जाती हैं। मातादीन कुछ दूर हट जाता है। सूत्रधार भी अलग हो कर······।

सूत्रधार : एक दिन मातादीन जी का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया (मातादीन की ओर बढ़ता है। "आइये साहब" कह कर उल्टे पैरों पीछे लौटता है जैसे मातादीन को

उन्होंने एस० पी० साहब के घर के लिये एड़ी चमकाने का पत्थर यान में रखा और चाँद से विदा हो गये। (यान चल पड़ता है) उन्हें जाते देख पुलिसवाले रो पड़े। (सूत्रधार और संभव हो तो एक दो लोग और मंच पर आते हैं और छाती पीट-पीट कर रोते हैं, यान मंच का एक चक्कर लगा कर बाहर निकल जाता है। रोने वाले पात्र पीछे-पीछे रोते हुए जाते हैं। सूत्रधार को छोड़ कर बाकी लोग बाहर निकल जाते हैं। सूत्रधार वापस मंच पर आता है)

सूत्रधार : बहुत अर्से तक यह रहस्य बना रहा कि आखिर चाँद में ऐसा क्या हो गया कि मातादीन जी को इस तरह एक-दम लौटना पड़ा। चाँद के प्रधानमंत्री ने भारत के प्रधान-मंत्री को क्या लिखा था? एक दिन वह पत्र खुल ही गया उसमें लिखा था—

लगाने का जुर्म क़ायम न कर दिया जाय। बच्चे नदी में डूबते देखकर भी उन्हें कोई नहीं बचाता, इस डर से कि उस पर बच्चे को डुबाने का आरोप न लग जाय। सारे मानवीय संबंध समाप्त हो रहे हैं। मातादीन जी ने हमारी आधी संस्कृति नष्ट कर दी। अगर वे यहाँ रहे तो पूरी संस्कृति नष्ट कर देंगे। उन्हें फौरन रामराज में बुला लिया जाय। (संवाद का अंतिम हिस्सा उस तरफ हटते हुए बोलता है, जहाँ मातादीन और अन्य पात्र मंच के बाहर बैठे हुए हैं। संवाद खत्म होते ही मातादीन पात्रों को नाटक के प्रारंभ की तरह हकालते हुए लाता है; सूत्रधार शामिल होता है। दूसरी ओर सभी पात्र निकल जाते हैं)।

वाक आउट : ईट आउट, स्लीप आउट

हरिशंकर परसाई

नाट्य रूपान्तर : तपन बनर्जी

(पन्द्रह से बीस अभिनेताओं का मूलतः कैंपस नाटक, नुक्कड़ नाटक के तौर पर या समुचित प्रकाश-व्यवस्था के साथ मंच पर भी खेला जा सकता है। एक मुख्य पात्र और शेष कोरस। वेश-भूषा निर्देशक की कल्पनाशीलता पर निर्भर)

नाटक के प्रारंभ में नेपथ्य से "संविधान" लोकतंत्र, प्रजातंत्र, जनता-जन इत्यादि नारों का समूह-स्वर उभरता है और क्रमशः तेज होता है। मुख्य पात्र इसकी ताल पर खुश होता नाचता मंच पर आता है। कुछ क्षणो बाद कोरस जो नेपथ्य से नारे लगा रहा था, मंच पर प्रकट होता है। मुख्य पात्र के मंच के बीचों-बीच आते ही कोरस जो अब तक कुछ-कुछ बिखरा था सिमट कर एक ठोस समूह बना लेता है। कोरस के पात्रों के हाथ विभिन्न दिशाओं में निकले रहते है तथा उँगलियाँ इस प्रकार चलती हैं जैसे कुछ दबोच लेना चाहती हों, मुख्य पात्र की पीठ इस दौरान कोरस की ओर रहती है। ठोस आकार बना हुआ कोरस चलता है, पर नारे बदल जाते हैं। 'आपका सहयोग' 'हमें दीजिये', "हमारा वादा", "हमारा कार्यक्रम" के मिले-जुले स्वर उभरते हैं। समूह मुख्य पात्र के पास जाकर रुक जाता है। नारे चलते रहते हैं। मुख्य पात्र इस ठोस आकार के चारो ओर घूमता है तथा इसमें से निकले हाथ उसे गुदगुदाते हैं। वह आनन्दित हो मुस्कुराता खिलखिलाता है। एक चक्कर पूरा होते ही कोरस के पात्र ठोस आकार को तोड़, मुख्य पात्र को हाथों पर उठा लेते हैं और मंच के एक कोने की ओर बढ़ते हैं, नारे चलते रहते हैं। कोने पर पहुँच कर कोरस के पात्र एक साथ "जीत गया भई जीत गया, हमारा नेता जीत गया" का नारा लगाते हैं और मुख्य पात्र को गिरा देते हैं, नारे लगाते हुए कोरस मंच पर घूमता है, मुख्य पात्र उनके पीछे-पीछे घूमता है। अन्य कोने पर पहुँच कर कोरस

अपने चारो हाथो-पैरो पर खड़ा हो जाता है और पात्र एक पैर दुलत्ती की तरह फटकारने लगते हैं, मुख्य पात्र डर कर पीछे हटता है और भागता है, चकरघिन्नी की तरह घूमते हुए मंच के बीचो-बीच गिर पड़ता है। कोरस के पात्र जहाँ थे वही लेट जाते हैं और बोलते है।

"यह एक सपना है। दुनिया की किसी संसद की तस्वीर इसमें नहीं है। सपने का फल क्या है, यह अलबत्ता राजनीतिक ज्योतिषियो के लिये विचारणीय है।"

घोषणा के दौरान दो पात्र कुछ अंतर से मंच पर प्रवेश करते हैं और निकल जाते है। पहले और दूसरे के हाथ में एक-एक तख्ती रहती है जिसमे क्रमश: "संसद" और "विश्राम कक्ष" लिखा रहता है। मुख्य पात्र उठ कर चलना शुरू करता है। हड़बड़ी के साथ दो पात्र मंच पर प्रवेश करते हैं। एक लेटे पात्रों के बीच घूमने लगता है, उनके नाम और सोने का समय चिल्लाकर बोलता है। दूसरा पात्र जो किनारे खड़ा रहता है, नोट करता जाता है। मुख्य पात्र एक ओर खड़ा हो यह देखता है फिर नोट करते पात्र से पूछता है।

मु० पा० : क्या यही संसद है?

(उत्तर नहीं मिलता, पात्र दो नोट करने में व्यस्त है)

मु० पा० : (ऊँची आवाज मे) क्या यही संसद है?

पात्र एक : (काम रोक कर और ऊंची आवाज मे) शोर मत करो।

पात्र दो : (मुख्य पात्र को गर्दन से पकड़ कर धकेलते हुए किनारे ले जाता है) क्या है?

मु० पा० : जी क्या यही संसद है।

पात्र दो : संसद तो पूरी इमारत मे फैली है।

मु० पा० : जी मेरा मतलब है क्या संसद की बैठक यही हो रही है?

पात्र दो : अबे! बैठक तो भीतर सभा भवन मे हो रही है। यह विश्राम कक्ष है, यहाँ बैठक होती है। (पात्र एक की ओर

बढ़ते हुए) हाँ आगे बोलो। (पात्र एक नाम और सोने का समय चिल्ला कर बोलने का क्रम जारी रखता है। मुख्य पात्र लेटे पात्रों के बीच खाली जगह देख कर लेटना चाहता है पर पात्र एक उसे अधलेटी हालत में ही पकड लेता है)

पात्र दो : यह क्या कर रहा है?

मु० पा० : सोना चाहता हूँ।

पात्र दो : (मु० पा० को खींच कर अलग करते हुए) तुम यहाँ नही सो सकते।

मु० पा० : क्यों?

पात्र दो : इसलिये कि यहाँ वही सो सकते है, जिन्हें यहाँ से तनख्वाह मिलती है।

पात्र एक : ऐसा नियम है।

मु० पा० : नियम।

पात्र दो : हाँ नियम, यह नियम पूरे देश में लागू है कि जिसे जहाँ से तनख्वाह मिलती है वह वहाँ सो सकता है। ये सांसद लोग भी तभी सो सकते है, जब संसद चल रही हो। रात को यहाँ सोना चाहें तो भी इन्हें सोने नही दिया जायेगा, (पात्र एक से) हाँ आगे चलो।
(पात्र एक बोलने का क्रम शुरू करता है तभी)

मु० पा० : यह क्यो लिख रहे हो?

पात्र दो : हिसाब रखना पड़ता है कि कौन सासद कितना सोया।

मु० पा० : हिसाब? संसद को कार्यवाही का इससे क्या संबंध!
(दोनो पात्र हँसते है)

पात्र एक : (पात्र दो से) राजनीतिक अंडरस्टैंडिंग कम लगती है इसकी साहब।

(दोनों पात्र, मुख्य पात्र को पकड़ कर किनारे ले जाते हैं)

पात्र दो : (मु० पा०) सुनो ! जैसे भीतर सरकारी और विरोधी दलों में बहस होती है, वैसे ही यहाँ सोने में स्पर्धा होती है। जिस दिन विरोधी पक्ष के सासदों के सोने के घंटे सरकारी पक्ष के सोने के घंटों से बढ जायेंगे, उस दिन सरकार को इस्तीफा देना होगा।

पात्र एक : जैसे ही भीतर खबर पहुँचती है कि विरोधी सदस्य ज्यादा सो रहे हैं, वैसे ही सरकारी दल का सचेतक कुछ सदस्यो को यहाँ सोने भेज देता है।

मु० पा० : क्या कभी ऐसा हुआ है ?

दोनों पात्र : कैसा ?

मु० पा० : कि विरोधी पक्ष के सोने के घंटे बढ गये हों और सरकार ने इस्तीफा दिया हो ?

पात्र एक : आज तक तो ऐसा नही हुआ पर प्रयत्न चल रहे हैं।

पात्र दो : बात यह है कि सरकारी दल बहुत चतुर है। वह कुछ ऐसे सदस्य ले आया है, जिन्हे यहाँ पैर रखते ही नींद आने लगती है। वे दस्तखत करके जो सोते हैं, तो शाम को ही उठते हैं। (फिर जैसे कोई भेद की बात हो) इन्हीं लोगो के दम पर सरकार टिकी है।

(मु० पा० कुछ न समझते हुए उनको ओर देखता है)

दोनों पात्र : (हँसते हुए) अरे हाँ भई।

(अचानक हड़बड़ाते हुए विरोधी दल के सचेतक का प्रवेश। लेटे हुए कुछ पात्रो को जगाता है)

सचेतक : उठो-उठो जल्दी भीतर चलो, वाक आउट करना है। (मंच पर भगदड़ मच जाती है। लेटे पात्र उठ कर इधर-उधर भागने लगते हैं। मु० पा० इस भगदड मे शामिल

हो जाता है। मंच पर उपस्थित पात्रों के अलावा और पात्र भी शामिल हो जाते हैं। भगदड़ शान्त होने पर संसद का दृश्य उपस्थित होता है, जिसमें विरोधी और सरकारी दल अलग-अलग दिखाई पड़ते हैं। एक पात्र जो अध्यक्ष है, ऊँचे स्थान पर तथा शेष पात्र ज़मीन पर उकड़ू बैठते हैं। मु० पा० मंच के एक कोने पर बैठ कर देखता रहता है। विधान सभा की कार्यवाही प्रारम्भ होती है)

एक विरोधी सदस्य : अध्यक्ष महोदय ! क्या मैं जान सकता हूँ कि माननीय मंत्री महोदय की मूँछों का क्या हुआ। उन्होंने खुद मूड ली या कोई और मूँछ ले गया ? मेरा अनुरोध है कि वे इस संबंध मे सदन को अँधेरे में न रखें।

(सदन में शोर होने लगता है)

अध्यक्ष : शान्त रहिये, कृपया शान्त रहिये।

(सदस्य से) कृपा कर आप बैठ जायें,

(बैठता नही। दूसरा विरोधी सदस्य भी खड़ा हो जाता है)

दूसरा विरोधी सदस्य : यह साधारण घटना नहीं है। इस मंत्रिमंडल मे सिर्फ़ मंत्रीजी की मूँछें हैं।

सत्ताधारी दल का सदस्य : यह गलत है। हमारे पार्टी प्रेसीडेन्ट की भी मूँछें हैं।

विरोधी सदस्य : लेकिन हम उनकी मूँछ को मूँछ नही मानते।

सत्ताधारी सदस्य : तुम्हें मानना होगा। हम साम्प्रदायिक प्रतिक्रियावादियों

की यह धांधली चलने नहीं देंगे कि वे हमारे अध्यक्ष की मूंछ को मूंछ ही न मानें। हम हर मोर्चे पर प्रतिक्रियावादियों से निपटने को तैयार हैं। चाहे वह मूंछ का ही मोर्चा क्यों न हो।

विरोधी सदस्य : यह मामला साधारण नहीं है अध्यक्ष महोदय! मंत्री महोदय साधारण मंत्री नहीं हैं। हमारे गोरक्षा आन्दोलन के वक्त वही गृहमंत्री थे। उनकी मूंछें देश की मूंछ हैं। फिर मूंछ भारतीय संस्कृति में उत्तम पौरुष का प्रतीक है।

अन्य विरोधी

सदस्य : अनुशासनहीनता की हद है कि दल की कार्यकारिणी में निर्णय हुए बिना कोई मंत्री मूंछें साफ करवा ले। हमारे पास पक्का सबूत है कि मंत्रीजी ने कम्युनिस्टों के दबाव में आकर मूंछें साफ करवा ली है। (शोर/अध्यक्ष आर्डर-आर्डर चिल्लाता है। शोर थमता है। मंत्री वक्तव्य देने को खड़ा होता है)

मंत्री : मैं सिर्फ इतना जानता हूँ कि सुबह मैंने हजामत बनायी, नहाया और खा कर यहां आ गया (डकार लेता है)। मूंछ है या नहीं, यह भी मैं नहीं कह सकता। सरकार इसकी जांच करेगी।

कई विरोधी

सदस्य : हाथ फेर कर देख लीजिये।

मंत्री : मैं सदस्यों की यह मांग स्वीकार नहीं कर सकता। सरकार का काम करने का एक तरीका है। वह जल्दबाजी में कुछ नहीं करेगी।

कुछ विरोधी

सदस्य : सदन को तथ्य जानने का हक है।

मंत्री : मैं कह तो रहा हूँ कि एक जाँच समिति बिठा रहा हूँ, जो यह जाँच करेगी कि पहले मेरी मूँछें थी या नही। अगर थीं, तो अब हैं या नहीं। अगर नहीं तो क्यों? अगर थी तो क्यो?

कुछ विरोधी

सदस्य : कमेटी की जाँच होने तक मूँछें फिर बढ़ जायेंगी। अभी सदन मे इसका फैसला हो जाना चाहिये।

अध्यक्ष : जब वे कह रहे है कि जाँच समिति बैठा रहे है, तो सदस्यों को संतुष्ट हो जाना चाहिये।

मंत्री : सरकार किसी तथ्य पर पर्दा नही डालना चाहती।

एक विरोधी

सदस्य : इसकी न्यायिक जाँच होनी चाहिये।

मंत्री : न्यायिक जाँच ही होगी। जैसे ही कोई जस्टिस किसी जाँच-समिति से फुर्सत होगा, उसे यह मामला सौंप दिया जायेगा।

एक विरोधी

सदस्य : धिक्कार है। यह राष्ट्रीय शर्म की बात है।

सत्ताधारी

सदस्य : चुप रह बे राष्ट्रीय शर्म के दलाल।

विरोधी

सदस्य : तू चुप रह बे सत्ता की चड्डी।

सत्ताधारी

सदस्य : थू-थू।

कई विरोधी

सदस्य : थू-थू।

अध्यक्ष : आर्डर-आर्डर। माननीय सदस्य सदन छोड़ दें।

विरोधी
सदस्य : हम नही छोड़ेंगे।

एक विरोधी : हम सीट के नीचे घुस जायेंगे।

दूसरा
विरोधी : हम कुर्सी की टाँग से चिपक जायेंगे।

(सदन में शोरगुल)

अध्यक्ष : यह क्या तमाशा है ? मैं कहता हूँ आप लोग सदन से बाहर चले जायें।

(सदन में ज़ोरों से शोर-शराबा। परस्पर आरोप-प्रत्यारोप)

एक विरोधी
सदस्य : शर्म की बात है कि अध्यक्ष महोदय सत्ताधारी दल के हितों की रक्षा करते है। वे निष्पक्ष नहीं हैं। सरकारी दल के सदस्यो की अनुशासनहीनता को प्रोत्साहन देकर वे भारतीय संस्कृति की रक्षा मे उठी आवाजों को नहीं दबा सकते। उनके इस आचरण के विरोध में हम सदन त्याग करते हैं।

(सदन में शोर)

सत्ताधारी दल के सदस्य भाग जाओ, निकल जाओ का मिला-जुला शोर करते हैं। कुछ विरोधी सदस्य सदन से निकल जाते है। (एक सदस्य को सत्ताधारी दल का एक सदस्य धक्का देता है। सदस्यों में आपस में धक्का-मुक्की होती है। मंच पर भगदड़ का दृश्य लेटने वाले पात्र फिर से अपने स्थान पर आकर लेट जाते हैं। मु० पा० उनकी ओर बढ़ता है। लेटने की तैयारी करने वाले एक पात्र को पकड़ता है)

मु० पा० : सुनिये।

सदस्य : (चिढ़ते हुए) क्या बात है ?

मु०पा० : आप अभी गये थे और अभी लौट आये।

सदस्य : विरोधियों की यही मुसीबत है। हमें पन्द्रह-बीस मिनिट में वाक आउट करना पड़ता है। आराम का मौका ही नहीं जरा आँख लगी नही कि कोई सदस्य आता है और वाक आउट के लिये भीतर ले जाता है, हम भीतर जाते है और नेता के पीछे फिर बाहर आ जाते है।

मु०पा० : मगर कुछ लोग तो बड़ी देर से सो रहे हैं।

सदस्य : अरे यार। वे स्लीप आउट कर रहे हैं। इस तरह तुम देखोगे कि कुछ सदस्य दिन भर कैन्टीन में बैठे खाया करते हैं। ये ईट आउट करते है।

मु०पा० : (उँगलियों पर गिनता है) वाक आउट ई ई ई......

सदस्य : ईट आउट।

मु०पा० : ईट आउट।

सदस्य : स्लीप आउट।

मु०पा० : स्लीप आउट। इन तीनो मे सबसे ज्यादा प्रभावशाली और उपयोगी आउट कौन सा है।

सदस्य : (बैठता है) वाक आउट तो साधारण बात है। कोई भी कर लेता है। ईट आउट जरा मुश्किल है, इसमें बार-बार खिलाने वाला ढूंढना पडता है। इनसे उत्तम तो स्लीप आउट है। पर अति उत्तम है ईट आउट और स्लीप आउट की संयुक्त कार्यवाही।

मु०पा० : संयुक्त कार्यवाही ?

सदस्य : हाँ, संयुक्त कार्यवाही जिसमे सदस्य कैन्टीन मे खाकर फौरन सो जाता है। नींद खुलती है, तो फिर खा लेता

है और फिर सो जाता है। ऐसा सदस्य जिस दिन चाहेगा देश का कायापलट कर देगा। (जमुहाई लेता है) अच्छा ! और सिर न खाओ। जरा लेटने दो। न जाने कब.........

(वाक्य पूरा भी नही होता कि एक पात्र भागता हुआ आता है और भीतर चलो-भीतर चलो चिल्लाता है। सोये पात्र हड़बड़ा कर उठते हैं। मंच पर भगदड़ मच जाती है। भगदड़ शान्त होने पर विधान सभा का दृश्य उपस्थित है। मुख्य पात्र एक कोने पर दर्शक की भाँति खड़ा रहता है)

एक विरोधी

सदस्य : अध्यक्ष महोदय ! यह साधारण बात नही है, कुत्ते की मौत का मामला है। कुत्ता। यह वह जीव है जिसने युधिष्ठिर का साथ उन बर्फीली घाटियो मे दिया था जहाँ सगे भाई और पत्नी तक उन्हें छोड़ गये थे। कुत्ता अपने मालिक के प्रति जितनी भक्ति रखता है, उतनी तो हम अपने पार्टी नेता के प्रति भी नहीं रखते (सरकारी पक्ष के सदस्य हँसते है) यह हँसने का नहीं लज्जा का मामला है, ऐसा एक कुत्ता बस से कुचल कर मर गया है। उस कुत्ते का खून इस सरकार के सिर पर है, यातायात मन्त्री हत्यारा है। उसे इस्तीफा देना चाहिये, बल्कि मैं तो कहूँगा सारा मन्त्रिमण्डल ही इस्तीफा दे। ऐसी सरकार को एक दिन भी सत्ता मे रहने का अधिकार नही है।

(विरोधी पक्ष के सदस्य -शर्म-शर्म, इस्तीफा दो की आवाजें लगाते हैं, शोर उठ खड़ा होता है, अध्यक्ष खड़े हो कर शान्त रहिये चिल्लाता है। शोर धीरे-धीरे थम

जाता है। सरकारी पक्ष का एक सदस्य, जो मन्त्री है, खड़ा होता है)

मन्त्री : अध्यक्ष महोदय ! मेरे पास इस बात के सबूत हैं कि कुत्ता रॉग साइड से चल रहा था और बस आने पर सड़क पार करने लगा था।

विरोधी
सदस्य : (एक साथ) झूठ है, सरासर झूठ है, कुत्ता बायी तरफ से चल रहा था।

एक विरोधी
सदस्य : और कुत्ता बायी तरफ से चले ऐसा नियम सरकार ने नही बनाया, इसलिये वह कही भी चलने को स्वतंत्र है, उसके लिये सड़क की दोनो बाजू सही है, इस दुर्घटना मे कुत्ते का कोई कसूर नहीं है।

(सरकारी पक्ष के सदस्य बैठ जाओ, बैठ जाओ का शोर करते है जो नेपथ्य से क्रमशः तेज होते नारों "सूखा राहत आरम्भ करो", "लेवी वसूली बन्द करो", "लगान वसूली बन्द करो" में दब जाता है। धीरे-धीरे नारे कम होने लगते हैं, एक अन्य विरोधी सदस्य खड़ा होता है)

विरोधी
सदस्य : अध्यक्ष महोदय ! मैं आपका और सम्मानित सदस्यों का ध्यान इस ओर खीचना चाहता हूँ कि सूखा पडने से सारी फसल चौपट हो गई है। किसान बरबाद हो गये है, वे भूखो मर रहे हैं और उनके मवेशी भी मर रहे हैं, हजारो किसान विधान सभा के फाटक पर अपनी फरियाद लेकर हाजिर हैं, उनके विषय मे भी सदन में विचार होना चाहिये।

अध्यक्ष : आप बैठिये। और भी महत्वपूर्ण मामले विचाराधीन हैं (सरकारी पक्ष से बैठ जाओ बैठ जाओ का शोर उठ खड़ा होता है। सदस्य को खींचकर बैठा लिया जाता है, मन्त्री खड़ा होता है)

मन्त्री : अध्यक्ष महोदय ! विरोधी सदस्यों के सब आरोप झूठे हैं। हमने उस कुत्ते का पोस्टमार्टम करवाया है, बस के पहिये की रासायनिक जाँच करवाई है, जाँचकर्ता का मत है कि कुत्ता बस से कुचल कर नहीं मरा। पहिये पर जो खून लगा था, वह कुत्ते का नहीं है।

तीन-चार

विरोधी सदस्य : (एक साथ) तो वह किसका खून है।

मन्त्री : वह आदमी का खून है।

(सन्नाटा छा जाता है मन्त्री जीवित होकर आगे बोलता है) तथ्य यही है। वह खून आदमी का था कुत्ते का नहीं, इसलिये मेरे इस्तीफा देने का प्रश्न ही नहीं उठता। (नेपथ्य से किसानों के नारे फिर सुनाई देते हैं। किसानों की समस्या पर बोलने वाला विरोधी सदस्य फिर खड़ा होता है)

विरोधी

सदस्य : किसानों की हालत पर सदन में विचार होना चाहिये। वे लगान की माफी माँगते हैं। खाने को अन्न माँगते हैं। मवेशियों के लिये भूसा माँगते हैं, मन्त्री महोदय सदन को बतायें कि वे इन किसानों के लिये क्या करना चाहते हैं।

मन्त्री : (उसी गर्व से) चाहते है ? हमने किया है, हमने जाँच करवाई, जिससे मालूम हुआ कि वहाँ सूखा नहीं पड़ा।

कुछ विरोधी

सदस्य : पड़ा है, पड़ा है ।

मन्त्री : अगर पडा भी है, तो फसल बरबाद नही हुई ।

विरोधी

सदस्य : हुई है । हुई है ।

मन्त्री : (ऊँचे स्वर मे) अगर फसल बरबाद भी हुई है, तो भी मुझे मालूम है, वहाँ किसान नही रहते ।

पहला विरोधी

सदस्य : तो फिर फसल कैसे हुई ?

मन्त्री : अगर किसान भी वहाँ रहते हैं और फसल भी वहाँ हुई और सूखा भी पड़ा, तो नुकसान नहीं हुआ । (सदन मे शोरगुल बाहर से किसानो की नारेबाजी तेज)

मन्त्री : (चिढ़कर ऊँची आवाज मे) मैं जानता हूँ इन किसानों को कम्युनिस्टों ने भड़काया है ।

विरोधी

सदस्य : पर उनकी समस्या तो हल कीजिये ।

मन्त्री : मेरे पास इस समस्या का यही हल है ।

(सदन में शोर)

अध्यक्ष : सदन यह जानना चाहता है कि इन बरबाद किसानों की समस्या को शासन कैसे हल करेगा ?

मन्त्री : अध्यक्ष महोदय ! ऐसी समस्याओं को हल करने का यही एकमात्र अचूक उपाय हमारे पास है कि जब कोई भी हमारे पास शिकायत लेकर आता है, हम कह देते है कि तुम्हें कम्युनिस्टों ने भड़काया है । इससे समस्या हल हो जाती है ।

(किसानों की नारेबाजी सुनाई देती है, मन्त्री और ऊंची आवाज में अपना वक्तव्य जारी रखता है) अध्यक्ष महोदय ! मैंने इस नुस्खे को अपने बच्चे पर आजमा कर देख लिया है। कल भूख लगने पर वह रोने लगा, तो मैंने उससे कहा, क्यों रोता है ? लगता है तुझे कम्युनिस्टों ने भड़काया है। अध्यक्ष महोदय, इतना सुनते ही बच्चा चुप हो गया और उसे दूध पिलाने की जरूरत ही नहीं पड़ी। इसलिये जब मैं कहता हूँ कि तुम्हें कम्युनिस्टो ने भड़काया है, तो इन किसानों को समझ लेना चाहिये कि उनकी समस्या हल हो चुकी है।

(सदन मे शोर। किसानों की नारेबाजी तेज होती है। किसानों के पक्ष में बोलने वाला सदस्य फिर उठ खड़ा होता है)

विरोधी
सदस्य : माननीय अध्यक्ष महोदय ! किसानो की समस्या के प्रति मंत्री जी का रुख सरकार के शर्मनाक रवैये को उजागर करता है। सरकार की यह नीति......

(सदन मे हो हल्ला, बैंठ जाओ, बैठ जाओ, का शोर तेज होने लगता है। जिसमे विरोधी सदस्य की आवाज दब जाती है। तभी बाहर से किसानो का एक झुंड नारे लगाता विधान सभा मे प्रवेश करता है। किसानो के पक्ष मे बोलने वाले सदस्यों के अलावा अन्य सदस्य अध्यक्ष के पीछे भाग कर खड़े हो जाते हैं। मुख्य पात्र प्रदर्शनकारियों मे शामिल हो जाता है। रक्षको का प्रवेश, प्रदर्शनकारियो पर डंडे बरसने लगते हैं। एक डंडा मुख्य पात्र के सिर पर लगता है। आर्त्तनाद करते हुए अपना सिर पकड़ कर चकरघिन्नी की तरह घूमता

हुआ आ कर मंच के बीच, अग्रभाग में गिर पड़ता है, मुख्य पात्र के गिरते ही मंच पर सभी पात्र फ्रीज हो जाते हैं। फिर कोरस मे बोलते है।

"यह एक सपना था, दुनिया की किसी भी विधानसभा की तस्वीर इसमें नहीं है। सपने का फल क्या है, यह अलबत्ता राजनीतिक ज्योतिषियों के लिये विचाराधीन है"

नई बिरादरी

स्वयं प्रकाश

(दूसरी ओर से रामनामी ओढ़े, माला जपता हुआ ब्राह्मण आता है)

ब्राह्मण : ओछे आदमी की ओछी बुद्धि ! चुप रहने की शालीनता पावे भी कहाँ से ? बेचारा ! इसकी रचना ही इसलिये हुई कि सेवा करे और गुण गाये ! पर बुरा हो इस कल-युग का...राम राम !

मनु मनु ! शाश्वत नियम है महाराज ! ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण की उत्पत्ति हुई...भुजाओ से...भुजाओं से गडम गडम...अडम्-बडम्... गड़म् अड़म् बड़म् शडम्...वेदपाठी ब्राह्मणो का वंशज हूँ महाराज ! अड़म् बड़म् शड़म् ! (तीसरी ओर से बगल में बहीखाता दबाये...कुछ... हिसाब लगाता हुआ बनिया आता है ।)

बनिया : देख भई ! तू बकबक करे तो मुझे कुछ नहीं । क्या ? पर इतना ध्यान रखना कि तेरे बाप ने अपनी माँ का मोसर किया था, तब मुझसे सौ रुपये लिए थे । कितने ? सौ । जो अब पाँच हजार सात [illegible] गये हैं [illegible] सो तूने मुझे दे दी, मैंने दे [illegible] है [illegible]

(चौथी ओर से सूट-बूट पहने अफसर पाइप पीता हुआ आता है)

अफसर : कितनी योजनायें बना रखीं हैं सरकार ने तुम्हारे लिये? कुछ पता भी है? बाबा रामदेव जी को जितने मिले सब ढेड ही ढेड! विकास भी करने को मिला तो कौन? हरीजन! जो खुद ही कूड़े में पड़ा रहना चाहे उसका कोई क्या उद्धार करे? हम कहते हैं तू आ, हम तुझे स्कीम बताते हैं। ले जा पाँच तरह के फार्म। पाँच-पाँच कापी टाइप कराके, एफिडेविट बनाके, अटेस्ट करवाके, एम०एल०ए० से रिकमण्ड करवाके जस्टीफिकेशन और बोनाफाइड और फीसिएबिलिटी सर्टिफिकट लगाके ले आ। थोड़ो बहुत अंग्रेजी तो आती ही होगी। आ, हम करते हैं तेरा विकास, पर नहीं साहब, वो कहते है न कि सूअर को चाहे राजगद्दी पर बिठा दो, छप्पन पकवान परोस दो, खायेगा तो टट्टी ही!

(रमिया और घूड़ा उन चारों की बातों से हैरान-परेशान थक कर उनके घेरे में बैठ जाते हैं। सूत्रधार आगे आता है।)

सूत्रधार : तो देखा आपने मेहरबान! आजाद भारत के ये पहलवान! कैसे उस भोले आदमी के नजदीक आते है। कभी धमकाते है कभी ललचाते हैं। कोई करना चाहता है इसका विकास! और कोई करना चाहता है इसका विनाश! विकास हो या विनाश! दोनों में है सिर्फ उसी का सत्यनाश! वह थोड़ा-थोड़ा इसे समझने भी लगा है, पर अभी-अभी सदियों की नींद से जगा है। आलसी नहीं है, पर सोच में पड़ा है। पीढ़ी दर पीढ़ी

के संस्कारों में जकड़ा है, सोचना शुरू हो गया पर नतीजे तक नही आ पाता, संगठित है न शिक्षित, इसलिये कुढ़ता तो है, पर जूझ नही पाता। इसी चक्कर मे फँसे होता है हलाल। इसका आगे नाटक में देखेंगे आप हवाल !

(सूत्रधार हट जाता है। रमिया और घूड़ा पहले की तरह बैठे हैं)

ठाकुर : अरे घूड़ा ! ओ घूड़ा ! सो गया क्या ? खेत को पानी कौन लगायेगा ? तेरा बाप ?

घूड़ा : मालिक ! सुबह से खटते-खटते कमर दोहरी हो गई है। दो रोटी पेट में डाल लूँ...

ठाकुर : और उधर जानवर भूखे खड़े रहें तो कुछ नहीं ? चल पहले उन्हें खिला, काम निपटा कर...

घूड़ा : मालिक...

ठाकुर : और सुन ! रमिया को हवेली भेज देना...पैर दबा जायेगी। दिन भर पड़े-पड़े ससुर...(जाता है।)

रमिया : मैं नही जाऊँगी।

घूड़ा : क्यो ?

रमिया : तू भी मत जा। देखते हैं क्या कर लेगा ?

घूड़ा : वो मालिक है ! सब कुछ कर सकते हैं। देखा नही पिछले साल सुरमती और गनेशी की लाश कहाँ मिली ?

रमिया : जब मरना ही है, तो एक बार क्यो न मर जायें ?

घूड़ा : गेली है, मान। रोटी बाद में आ कर खा लेंगे, तो मर नहीं जायेंगे। मैं जा रहा हूँ।

ब्राह्मण : अरे घूड़ा ! ओ घूड़ा ! तेरा सत्यानाश ! आज हमारी यज्ञशाला के पीछे की घास काटने को कहा था, कहाँ से सुना, कहाँ से निकला ? कल सुबह जामवंतपुर से पाखन्डानन्द जी महाराज पधार रहे हैं, देखेंगे तो क्या

सोचेंगे ? कितना गंदा ग्राम है । सबकी नाक कटेगी, कि नहीं ? चल बेटा ! जरा चल कर सफाई कर दे ।

घूड़ा : महाराज ! मैं रोटी...

ब्राह्मण : राम राम ! भोजन में इतनी आसक्ति ? यह तो अग्नि-कुण्ड है पागल । कभी तृप्त नहीं होगा । ब्राह्मण की सेवा का अवसर मिल रहा है और तू पेट के बारे में सोच रहा है ! छिः छिः आ जा । तर जायेगा । हमें देख । हमने खुद तीसरे पहर के बाद कुछ नहीं खाया, पंडिताइन बुला रही थीं, पर आ गये । पहले काम...फिर जो है सो...मैं चलता हूँ, आ जा । (जाता है)

रमिया : पंडित जी का काम तो करना ही पड़ेगा ।

घूड़ा : नहीं करूँ तो क्या कर लेगा ?

रमिया : बाभन के शाप से धरती भसम हो जाती है, पहले ही खोटे नसीब की जून भुगत रहे हैं । क्यों मुसीबत न्यौतते हो ? उसके साप से मेरे रामेसर को कुछ हो गया. .

घूड़ा : रामेसर को कुछ नहीं हो सकता, मैं कहे देता हूँ बस !

रमिया : तेरे कहने से क्या होता है ?

घूड़ा : होगा, बस एक बार रामेसर शहर से पढ कर आ जाये, फिर मेरे कहने से भी होगा, बहुत कुछ ।

बनिया : अरे कोई है ? ओ घूड़ाजी ? मर गया क्या ?

घूड़ा : कौन है ?

बनिया : जिन्दा है, जै लछमीनारायण की । मैंने सोचा, गया मेरा कर्जा । घूड़ाजी, बाहर आइये ।

घूड़ा : क्या बात है सेठजी ? इत्ती रात कैसे तकलीफ की ?

बनिया : बाहर आइये फिर बताते हैं, मूँ क्या देख रहा है मूरख ? बाहर आ ।

के संस्कारों में जकड़ा है, सोचना शुरु
नतीजे तक नहीं आ पाता, संगठित है न
लिये कुढ़ता तो है, पर जूझ नहीं पाता। इ
कैसे होता है हलाल। इसका आगे नाटक
हवाल!
(सूत्रधार हट जाता है। रमिया और
तरह बैठे है)

ठाकुर : अरे घूड़ा! ओ घूड़ा! सो गया क्या?
कौन लगायेगा? तेरा बाप?

घूड़ा : मालिक! सुबह से खटते-खटते कमर
दो रोटी पेट में डाल लूँ...

ठाकुर : और उधर जानवर भूखे खड़े रहें
पहले उन्हे खिला, काम निपटा कर

घूड़ा : मालिक...

ठाकुर : और सुन! रमिया को हवेली
जायेगी। दिन भर पड़े-पड़े ससुर

रमिया : मैं नहीं जाऊँगी।

घूड़ा : क्यों?

रमिया : तू भी मत जा। देखते हैं क्या

घूड़ा : वो मालिक हैं! सब कुछ कर
साल सुरमती और गनेशी क

रमिया : जब मरना ही है, तो एक बार

घूड़ा : गेली है, मान। रोटी बाद में
नहीं जायेंगे। मैं जा रहा हूँ।

ब्राह्मण : अरे घूड़ा! ओ घूड़ा! तेरा सत्यानाश
यज्ञशाला के पीछे की घास काटने को कहा
सुना, कहाँ से निकला? कल सुबह जामव
पाखन्डानन्द जी महाराज पधार रहे हैं, देखेंगे त

दरवज्जे पर ही छोड़ गया बेवकूफ !

(चुप्पी)

घूड़ा : तो आप यहाँ क्यों आए हो ?

बनिया : छोटा सा काम है, अब हम तो लाश को कैसे हाथ लगायें ? तू जरा उसको घसीट पर बावड़ी तक छोड़ आ !

(घूड़ा गुस्से से देखता है, बीड़ी जलाता है)

बनिया : नाराज क्यों होता है ? चल बावड़ी तक न सही, मस्जिद तक ही पटक आ ।

घूड़ा : सेठजी, थोड़ी परलोक की भी सोचो ! वहाँ सबको हिसाब देना पड़ेगा । आदमी आखिर आदमी होता है । कोई ढोर मरा हो तो हम घसीट कर भी ले जायें...... पर आदमी ? छिः छिः ! शरम करो सेठजी !

रमिया : अरे शरम-वरम बाद में कर लेंगे । कब ? बाद में कर लेंगे । अभी तो सवाल उस हत्या को हटाने का है ।

रमिया : (भीतर से) अरे क्या करने लगे ? रोटी नहीं खानी ?

घूड़ा : आया ।

बनिया : तू ये मत समझ के मैं तुझसे बेगार करवा रहा हूँ ! पैसे दूँगा ।

घूड़ा : नहीं, नहीं सेठजी ! ये काम मेरे से नहीं होगा ।

बनिया : (जेब से पैसे निकाल कर) ये सौ का नोट है । कितने का ? सौ का । इसके एक सौ एक-एक के नोट आ सकते हैं और चार सौ पावलियाँ ! कितनी ? चार सौ, सब तेरे ! जा ! (घूड़ा की मुट्ठी में ठूंसने लगता है ।) सब दिये, सफाई से काम करेगा और अपना मुखारविंद बंद रखेगा, तो हम तेरे कर्जे-वर्जे भी माफ कर देंगे, एकदम टोटल, क्या ? कितने ? टोटल !

(घूड़ा बाहर आता है, सेठ उसके कंधे पर हाथ रख कर एक तरफ ले जाता है)

बनिया : वल्लभपुर में हमारे एक आसामी थे, लादाजी। कौन ?

घूड़ा : लादाजी।

बनिया : हां, लादाजी मेघवाल। बड़ी खुशी की बात है कि आज मर गये।

घूड़ा : हैं !!

बनिया : नही खुशी की नहीं, दुख की बात है। काहे की ?

घूड़ा : दुख की।

बनिया : हां, पर एक तरह से देखा जाये तो खुशी की भी है। उन पर हमारा पुराना कर्जा था। दस रुपये का। कितना ?

घूड़ा : दस रुपये का।

बनिया : जो बढ़ते-बढ़ते साढ़े सात सौ हो गया था, चांदी-जानवर-जमीन सब हम ले चुके थे। जोरू भी, पर अब उसमें भी कोई दम की बात बची नही थी।

घूड़ा : सेठजी तुमने चढ़ा तो नही रखी है ?

बनिया : गले मे अटकी हड्डी थी रे, न नीचे जाये न बाहर निकले। आज आया। जरा सा मेरा धक्का लगा और गिर गया। गिर गया और मर गया।

घूड़ा : मर गया ?

बनिया : एकदम मर गया, ठंडा हो गया। आदमी की जान जाने में कितनी देर लगती है ? खुश रहो ऐ मेरे वतन के लोगों, वो क्या कहते हैं के, हम तो सफर करते हैं।

घूड़ा : तो सेठजी, पुलिस आयेगी !

बनिया . तू सुन तो। अब मरने वाला तो मर गया, लाश हमारे

दरवज्जे पर ही छोड़ गया बेवकूफ !

(चुप्पी)

घूड़ा : तो आप यहाँ क्यों आए हो ?

बनिया : छोटा सा काम है, अब हम तो लाश को कैसे हाथ लगायें ? तू जरा उसको घसीट पर बावड़ी तक छोड़ आ !

(घूड़ा गुस्से से देखता है, बीड़ी जलाता है)

बनिया : नाराज क्यों होता है ? चल बावड़ी तक न सही, मस्जिद तक ही पटक आ ।

घूड़ा : सेठजी, थोड़ी परलोक की भी सोचो ! वहाँ सबको हिसाब देना पड़ेगा । आदमी आखिर आदमी होता है । कोई ढोर मरा हो तो हम घसीट कर भी ले जायें...... पर आदमी ? छि: छि: ! शरम करो सेठजी !

रमिया : अरे शरम-वरम बाद मे कर लेंगे । कब ? बाद में कर लेंगे । अभी तो सवाल उस हत्या को हटाने का है ।

रमिया : (भीतर से) अरे क्या करने लगे ? रोटो नही खानी ?

घूड़ा : आया ।

बनिया : तू ये मत समझ के मैं तुझसे बेगार करवा रहा हूँ ! पैसे दूँगा ।

घूड़ा : नही, नही सेठजी ! ये काम मेरे से नही होगा ।

बनिया : (जेब से पैसे निकाल कर) ये सौ का नोट है । कितने का ? सौ का । इसके एक सौ एक-एक के नोट आ सकते है और चार सो पावलियाँ ! कितनी ? चार सो, सब तेरे ! जा ! (घूड़ा की मुट्ठी मे ठूँसने लगता है ।) सब दिये, सफाई से काम करेगा और अपना मुखारविंद बंद रखेगा, तो हम तेरे कर्जे-वर्जे भी माफ कर देंगे, एकदम टोटल, क्या ? कितने ? टोटल !

घूड़ा : नही सेठजी, मैं ऐसे काम में नही फंसता ।

बनिया : अरे डोफा ! जरा से कचरे को यहाँ से उठा कर वहाँ पटकने के एवज में मैं तेरा सारा कर्जा माफ कर रहा हूँ । तू क्या सोचता है, मैं किसी और से नही करवा सकता ? सौ तैयार हो जायेंगे तेरे भाई, पर तू अपना ही आदमी है इसलिए......

घूड़ा : सेठजी, तुम चलो । मैंने रोटी नही खायी है । खा कर देखूंगा ।

बनिया : क्या देखेगा ?

घूड़ा : जँचेगी तो आ जाऊंगा ।

बनिया : अरे जँचा ले अभी, रोटी की फिकर मत कर, तर माल छकाऊँगा । (जेब से आधी भरी बोतल निकाल कर) ये देख । है न ? के नही है ? (धीरे से) एक और पड़ी है घर पे ।

रमिया : अरे सुनो !

घूड़ा : मैं रमिया से पूछ लूं ।

बनिया . अंगरेजी है साले ! पर तुम्हारे भाग में कहाँ ! लुगाई की अक्कल मे चलते तो हम भी तुम्हारी तरह दूसरों की टट्टी ही उठाते ! नामर्द कहीं का, जा मर······ (जाने लगता है)

रमिया : (बाहर आकर) अरे अब चलो भी ।

घूड़ा : सेठजी ठहरो । चलो, मैं तैयार हूँ ।
(सेठ मुस्कराता है, रमिया विस्मय से देखती है, घूड़ा दुविधा में होकर भी चल पड़ता है । फ्रीज ।)

सूत्रधार : दारू की प्यास जगाई और मुजरिम उसे बनाया,
छप्पन पकवान परस के, भूखा ही उसे उठाया ।

छल-छद्म छिछोरी छलना, ये हैं सेठों की माया,
कर्जा माफी का लालच दे जेल उसे भिजवाया।

(रमिया माथा पकड़ कर रो रही है, विलाप कर रही है सेठ, पंडित, ठाकुर और अफसर उसके चारों तरफ घूम-घूमकर तमाशा देख रहे हैं)

रमिया : अरे मार दिया रे ! गरीब के पेट पर जूता रख कर खड़ा हो गया। अरे तेरा सत्यनास हो जाये मेरे मरद को जेहेल भेज दिया, हत्यारे ने हमको मार डाला रे ! तेरी मट्टी खराब हो, तेरे कीड़े पड़ें, तेरा सत्यानाश हो जाये ! अरे झूठा फँसा दिया रे ! मेरे मरद को दारू पिला कर गिरफ्तार करा दिया रे ! अरे इस खूनी को भगवान देखेगा ! तेरी लास में कीड़े पड़ेंगे और रामेसर रे ऽ ऽ ऽ गरीब को मार डाला रे ऽ ऽ ऽ !

अफसर : इसे हमारी सहायता की आवश्यकता है।

ठाकुर : हमारे होते हमारी प्रजा ऐसा विलाप करे। हम पर लानत है।

ब्राह्मण : दान करो महाराज ! दान से बड़ा कोई धर्म नहीं, ऐसे ही अवसरों पर धर्म का पालन करने से लोग दानवीर कहलाते है।

बनिया : भई कर्जा तो मैं छोड़ दूँगा। थोड़ा सा क्या ? थोड़ा सा। जमीन आप छोड़ दो ! बेचारी का गुजारा हो जायेगा।

(चारों रमिया के गिर्द उसकी तरफ पीठ फेर कर खड़े हो जाते है)

अफसर : गाँव मे तरह-तरह की अफवाहें फैल रही है।

ठाकुर : कुछ देर में पुलिस आ जायेगी। अब वो जमाना तो

नहीं जब हमीं......

ब्राह्मण : अदालत सच नहीं, गवाह देखती है महाराज ! जहाँ लाठी काम नहीं आती वहाँ......

बनिया : अपना बरसों का साथ है ! मैंने आड़े वक्त पर आपका साथ निभाया है । अब आप मुझे अकेले मत छोड़ देना !

अफसर : अभी उसे सजा कहाँ हुई ?

ठाकुर : हो जायेगी ।

ब्राह्मण : करमगति टारे नाहिं टरै !

बनिया : मेरी लाज आपके ही हाथ है महराज !

(चारों एक-दूसरे के हाथ पकड़ कर घेरा बना लेते है)

रमिया : अरे मार डाला रे ! झूठा फँसा दिया रे, हम तो पहले ही मरे हुए हैं, हम क्या मारेंगे किसी को । अरे इस हत्यारे को भगवान देखेगा । कोढ़े पड़ेंगे । निपूता मरेगा । अरे गरीब को बर्बाद कर दिया रे ! कोई तो इन्साफ करो......

(एक कोने मे दो युवक आकर खड़े हो जाते है)

एक युवक : (वहीं से) अपनी पवित्र नफरत को इस तरह बरबाद मत करो ! माँ ! (सेठ, ठाकुर, अफसर और ब्राह्मण उठ कर भाग जाते हैं । रमिया उठ कर युवक के पास जाती है)

रमिया : (युवक से) कौन हो ? कौन हो तुम ?

युवक : मैं रामेसर का......

रामेसर : ये मेरा दोस्त है, मेरे साथ पढ़ता है। शाम को एक स्कूल में पढाता भी है ।

रमिया : है कौन ? तुम हो कौन ?

युवक : आदमी हूँ ।

रामेसर : ब्राह्मण है।

युवक : हूँ नही, था। जब पैदा हुआ। अब आदमी हूँ, जाति सूचक पुछल्ले फेंक दिये।

रामेसर : थाने में कितने रपट करायी माँ ?

(रमिया चुपचाप अपनी जगह जाकर सिर पकड़कर बैठ जाती है)

रमिया : क्या करेगा कोई ? ऊँची जात वाला हमारी क्यों मदद करेगा ? शहर वाला हमारी क्या मदद करेगा ?

रामेसर : माँ !

(रमिया रामेसर को पास बुलाती है और समझाती है)

रमिया : क्यों इन लोगों की बात में आता है ? ये शहर वाले तुझे भी बाबूसाब बना देंगे। पराया बना देंगे। ये तो उन्हीं की तरफ बोलेंगे। मौका पड़ने पर ठाकुर और वनिये की तरफ। उनकी मीठी-मीठी बातों में मत फँस।

रामेसर : ये ऐसा नहीं है, माँ।

युवक : मैं ऐसा नही हूँ माँ। मैं आपके लिए......

रमिया : क्या कर सकते हो तुम हमारे लिए ? ढांग-चराने जा सकते हो ? घास-चारा काट सकते हो ? गाय का दूध काढ सकते हो ? कटाई-बुवाई-निराई-गुडाई कर सकते हो ? (स्वर तेज होता जाता है) मरे जानवर का चमडा उतार सकते हो ? जूतियाँ गाँठ सकते हो ? ठाकुर-ठकुराइन के बदन पर मालिश कर सकते हो ? भूखे रह कर बच्चे को शहर में पढ़ा सकते हो ? मेरे मरद की जगह जूतें-गाली खा सकते हो ? मेरी जगह अपनी देह तुड़ा सकते हो ? हमारे माथे का लेख बदल सकते हो ?

रामेसर : माँ ऽऽ!

रमिया : क्या कर सकता है ये हमारे लिए ?

युवक : मैं तुम्हारी तरफ से अर्जी लिख सकता हूँ।
(तीनों चुप हो जाते हैं)

रमिया : (रामेसर से) ये रोटी कहाँ खायेंगे ?

रामेसर . क्यों ? हमारे साथ।
(रमिया रामेसर को, रामेसर युवक को, युवक रमिया को देखते हैं। रमिया एक पोटली उठा लाती है। तीनों साथ बैठ कर खाने लगते हैं। थानेदार, बनिया और ब्राह्मण आते हैं।)

थानेदार : शड़प शड़प ! अब हम आ गये हैं याने की कोई माई का लाल भागने न पावे। शड़प !
(हवा में संटी घुमाता है। तीनों खाना छोड़ कर खड़े हो जाते है)

बनिया : ये ! ये उसकी लुगाई। और वो उसका छोरा।

थानेदार : शड़प ! हम जानते हैं, याने कि तुम घूड़ा वल्द भूरजी की घरवाली हो ?
(रमिया सिर हिलाती है)
....हाँ याने की (इधर-उधर देखकर) उस पर मर्डर का चार्ज है। हम मामले की तहकीकात करेंगे, तुम्हारे यहाँ कोई टेबुल-कुर्सी नही है ? यहाँ कितनी बदबू आ रही है, औरत ! तुम हमारे पीछे-पीछे हवेली आ जाओ, याने की शड़प् ! वहो तहकीकात होगी।

रामेसर : हवेली ?

बनिया : ठाकुर साहब की हवेली।

ब्राह्मण : ठाकुर साब इनके मौसेरे भाई है।

बनिया : सारा इन्तजाम वही है।

ब्राह्मण : डरने की बात नहीं है रमिया ! हम हैं न !

(अफसर आता है)

अफसर : (थानेदार से) सर...वो चाय के लिए...

थानेदार : शड़प्, पहले मौका देखना पड़ेगा।

बनिया : हुजूर ! वारदात तो पहले यहीं हुई है। इसी घर में। इसी जगह।

ब्राह्मण : मैंने खुद देखा महाराज ! अपनी आँखों से। राम राम ! पैसों के लिए हत्या !

बनिया : मुझसे ही तो पैसे ले कर लादाराम ने इसको दिये थे। दोनों पिये हुए भी थे। बात बढ़ गई।

ब्राह्मण : राम राम ? ऐसा भी क्या नशा !

अफसर : तभी, तभी मैं कहूँ घूड़ा मुझसे पन्द्रह सौ रुपये अचानक क्यों मांग रहा था !

थानेदार : कब की बात है ये ?

अफसर : कल शाम की तो, मैं बी० डी० ओ० साहब के साथ ..

थानेदार : शड़प् ! सब शड़प् ! ये सारी बकवास वहीं चलके करना, मेरा बदबू के मारे सर फटा जा रहा है, थाने को चलिए आप लोग, औरत ! जल्दी आ जा !

(सब जाने लगते हैं)

युवक : रुकिए।

(सब चौंकते हैं)

युवक : ये वहां नहीं आयेगी। आपको जो कुछ पूछना हो यहीं पूछिये।

थानेदार : ये कौन है ?

ब्राह्मण : पहले कभी देखा नहीं। इस गाँव का तो नहीं लगता।

बनिया : तू कौन है भई ? लाड़ी की भूआ ?

रामेसर : ये मेरा दोस्त है ।

थानेदार : शड़प ! दोस्त क्या होता है ? नाम क्या है ? बाप का नाम क्या है ? यहाँ क्यों आया है ?

अफसर : संदिग्धावस्था में है सर !

थानेदार : हमारे रहते कोई उल्लू का पट्ठा संदिग्ध नहीं रह सकता, कौन है बे तू ?

युवक : देखिए आप जरा तमीज से बात कीजिए । इन्वेस्टिगेशन करने आए हैं, कीजिए । गाली देने का आपको कोई हक नहीं है ।

थानेदार : शड़प् ! याने की तू हमको तमीज सिखायेगा ? चीर कर रख दूंगा हरामजादे !

युवक : हरामजादे आजकल सादे कपड़ों में नहीं घूमते ।

थानेदार : जबान चलाता है ! शड़प् मैं तेरी...(मारने बढ़ता है । रमिया बीच मे आ जाती है)

युवक : ये धमकियाँ किसी और को देना । सब-इन्स्पेक्टर हो, कोई तोप नहीं हो !

(रामेसर युवक को खींचकर दूसरी तरफ ले जाता है)

बनिया : देखो ! आजकल की शिक्षा ।

ब्राह्मण : तुझे नहीं कह रहे ये भाई । तू अपना काम कर ! इन लोगों के बीच मे......

अफसर : अपोजीशन का आदमी है जनाब ! मर्डर के पीछे जरूर......इसका भी कोई......

(फ्रीज)

सूत्रधार : सबसे नीचे है जनता, जनता पर है चपरासी,
चपरासी पर बाबू हैं, बाबू पर चढ़ी उदासी ।

बाबू के ऊपर अफसर, अफसर ऊपर फिर अफसर ।
अफसर का अफसर मन्त्री, मन्त्री का अफसर तन्त्री ।
मन्त्री के ऊपर कुर्सी, कुर्सी के ऊपर पैसा ।
यह लोकतन्त्र का भैया देखो सर्कस है कैसा ।
इस कुएँ में अब सोचो यह भंग पडी है क्यो कर ?
क्यों इक रानी गड्डी में ? बाकी सारे क्यों जोकर ?

(ठाकुर आता है । थानेदार के कंधे पर हाथ रख कर उसे शात करता है और आगे बढ़ कर रमिया को एक थप्पड़ जमाता है, वह गिर पड़ती है । रामेसर और युवक ठाकुर पर टूट पड़ते हैं, लेकिन सब मिलकर उन्हें जमीन पर गिरा देते हैं और उन पर लात-घूंसे बरसाने लगते हैं । बनिया अपनी जूती उतार कर एक अफसर को और एक ठाकुर को देता है जिससे वह तीनो पीटते है बनिया खुश होता है और तालियां बजाता है ।)

सूत्रधार : ये बड़े क्रूर जोकर है, जन को लोहू रुलवाते
धनिको के पैर दबाते, मुफलिस को मार लगाते ।
हर रोज तमाशे इनके जन को नंगा कर जाते ।
मर जाता देश मेरा, बस ये जिन्दा रह जाते ।

(अचानक हाथों मे बंधी हथकड़ी में लटकी जंजीर हवा में घुमाते, पाँव मे बेड़ियां पहने घूड़ा आता है ।)

घूड़ा : ठहर जाओ ! असल बाप की औलाद हो, तो कोई भागे नही, औरत पर हाथ उठा कर बहादुरी दिखा रहे हो ? मुझसे बात करो ।

(बनिया भाग कर एक कोने में छिप जाता है । ब्राह्मण भाग जाता है । घूड़ा जंजीर से बाकी सबको पीटना शुरू करता है)

ठाकुर : अरे ये कहाँ से आ गया ? (बोलते ही एक पड़ती है) हाय !

अफसर : पुलिस कस्टडी से भाग आया (बोलते ही एक पड़ती है) ओ ऽ या रे ऽऽ

थानेदार : फाँसी पे चढ़ाऊँगा ! झड़ाप् थाने की...(बोलते ही एक पड़ती है)

झड़ाप !

(तीनों पिट कर भाग जाते हैं ।)

घूड़ा : पिट गया ? (रामेसर का गला पकड़ कर) चुपचाप पिट गया ? साले, देता दो-चार तू भी ।

रमिया : तुम भाग कर आये हो ? वो तुम्हें पकड़ लेंगे ।

घूड़ा : उन्होंने मेरे साथ धोखा किया । मैंने भी उनके साथ किया ।

युवक : कानून......

घूड़ा : कानून कहीं होता तो चार मरद मिल कर मेरी जोरू को पीटते नहीं अभी ।

रमिया : तुम छिप जाओ । तुम चले जाओ, वो तुम्हें पकड़ लेंगे ।

घूड़ा : मैं जा रहा हूँ । मैं बागी बन जाऊँगा या पकड़ा जाऊँगा । (रामेसर और युवक से) पर तुम बदला लेना । मैं जा रहा हूँ !

(जाता है)

रामेसर : माँ अब अपन यहाँ नहीं रहेंगे । चलो शहर चलेंगे । मजदूरी करेंगे और जियेंगे ।

रमिया : भाग जायें ? अपना गाँव-घर छोड़ कर भाग जायें ?

रामेसर : यहाँ हम फिर आयेंगे माँ । लेकिन आदमी की तरह

जीने के लिये। जानवरों की तरह मरने के लिए नही।

रमिया : वहां मर जायेंगे तो कंधा कौन देगा ? बीमार पडेंगे तो पानी कौन पिलाएगा ? यहां हमारा घर-हमारी बिरादरी तो है—वहां हमारा कौन होगा ?

रामेसर : (नाराज होकर) यहां हमारा कौन है ? बाप को पकड कर ले गये, कौन आया ? तेरे घर चूल्हा नही जला, कौन आया ? इत्ते लोग तेरी कुटम्मस कर गये, कौन आया ? एक भी दिखायी दिया ? कहां है अपनी बिरादरी ? सब ठाकुर के खेत मे खट रहे होंगे। जब उन पर पडेगी, तो तू काम छोड़ कर जायेगी ? क्या इसी को बिरादरी कहते हैं ? (फ्रीज)

सूत्रधार : यही सब से बड़ा सवाल है जनाब ! आदमी की बिरादरी कहां है ? कौन सी है ? यदि हो, तो इनके आँसू पोछने कोई क्यो नही आया ? खून चूसने वाले। सताने वाले आपने देखा संगठित हैं, मिले हुए हैं, एक हैं और जो पिट रहे हैं वे असंगठित है, बटे हुए है, अनेक है। रामेसर और उसका दोस्त अगर इन लोगों को जोड़ पायेंगे तभी जुलम-जासती की चट्टान को तोड़ पायेंगे ? मगर इन लोगों को खुद भी जागना और जगाना पड़ेगा, भागना नही, चोट्टों को भगाना पड़ेगा।

सब : जोड़ेंगे जवान ! आदमी को आदमी से जोड़ेंगे जवान। सदियो के शिकजे को भी तोड़ेंगे जवान ! तोड़ेंगे जवान। फोड़ेंगे जवान ! भंडा काली करतूतो का फोड़ेंगे जवान।

बहुत सहा बहुत सहा धांड़ैतों का राज,
ठोली थोड़ा करके इनको छोड़ेंगे जवान ।
छोड़ेंगे जवान, छोड़ेंगे जवान ।
सधे पाँव लिये हाथ क्रांति की मशाल ।
देखना कब आगे-आगे दौड़ेंगे जवान ।
दौड़ेंगे जवान, दौड़ेंगे जवान ।

बरगद-बरगद कुत्ता

सतीश शर्मा

प्रथम और २५ प्रदर्शन तक के पात्र

मदारी	: सारंग सेठ
जमूरा	: उमेश शर्मा
व्यक्ति १ / रावण	: सतीश शर्मा
व्यक्ति २ / कंस	: शशिधर मिश्र
व्यक्ति ३ / दुर्योधन	: शरद वर्मा
व्यक्ति ४ / हिरण्यकश्यप	: मणिमय मुखर्जी
देवीजी	: शरद वर्मा
कोतवाल	: सारंग सेठ
चार अन्य पात्र	: शशिधर, उमेश, मणिमय, निरंजन (मदारी एवं जमूरे से भी अन्य पात्रों का काम लिया जा सकता है)

प्रथम प्रदर्शन, १५ अगस्त, ८४ अब तक २५ से अधिक प्रदर्शन सतना, रीवा, मैहर, जबलपुर के विभिन्न "नुक्कड़" व अन्य स्थलों में ।

(मदारी डमरू बजा कर भीड़ एकत्रित कर रहा है)

मदारी : मेहरबान, कदरदान आज मैं आपको ऐसा खेल दिखाऊँगा जो न आपने रेडियो पर सुना होगा, न वीडियो पर और न फिलिम में देखा होगा। किसी शायर ने कहा है, क्या कहा है ? कि—

मिटा दे अपनी हस्ती को अगर तू मरतवा चाहे
कि दाना खाक मे मिल कर गुले गुलजार होता है।

हाँ तो मेहरवान कदरदान, आज के खेल का आइटम है वाटर आफ इण्डिया और पेरिस की क्वीन। बस पाँच मिनिट, वस पाँच मिनिट मे शुरू होगा मेरा खेल। पर मेहरबान खेल के समय कोई अपनी जगह से नही हिले, मेरी जिन्दगी और मौत का सवाल है। किसी शायर ने कहा है, क्या कहा है ? कि —

सच्चाई छुप नही सकती बनावट के उसूलो से।
कि खुशबू आ नहीं सकती कभी कागज के फूलो से।

(लकडी से जमीन पर गोल घेरा बनाता है) आप लोग इस घेरे से बाहर रहे। हाँ तो बाबूजी एक बार प्रेम से बजाओ ताली।

(डमरू बजा कर घूमता है और कठोर मुद्रा बना कर आकाश की ओर हथेली उठा कर मंत्र मारने की मुद्रा मे)

ठैर, ठैर, ठैर...... डटा रे, डटा रे, डटा रे ! छान छान छान। किसी की न मान। निकल जाएगी जान। तो किससे कहेगा छान। काली कलकत्तेवाली। डटा रे, डटा रे, तेलिया मसान।

जमूरे ! ओ जमूरे ! अबे कहाँ मर गया ? (चिल्लाकर) जमूरे !

जमूरा : (बीडी फेंक कर) आया उस्ताद।

मदारी : आया के बच्चे, इतनी भीड़ जमा है खेल देखने को और तू है कि नदारद। जानता नहीं बे, सब बिजी लोग हैं। किसी के पास नहीं है फालतू वक्त। तो चल शुरू कर अपना खेल।

जमूरा : कौन सा खेल दिखायें उस्ताद, जनता बड़ी जागरूक है, बड़ी जल्दी बोर हो जाती है। और कोई नया आइटम भी तो नहीं है अपने पास !

मदारी : धत् तेरे की, अबे घामड़, तेरी अक्कल क्या घास चरने गयी है, मैं पैंतीस बरस से एक ही खेल दिखा-दिखा कर ऐश कर रहा हूँ और तू कह रहा है कि कोई नया आइटम नहीं है, अबे चिलगोजे के छिलके, पुराने पर नया लेबल लगा, अकल को जगा और भाषण दे।

जमूरा : उस्ताद और कुछ भी करा लो पर भाषण नहीं उस्ताद, लोग बाग मेरा खून पी जायेंगे। मैं तो पहले ही अनाथ हूँ, कोई मातमपुर्सी को भी नहीं आयेगा........ये अपन से नहीं होगा उस्ताद।

मदारी : होयेगा, कैसे नहीं होयेगा। भाषण तो तुझे देना ही होगा। भाषण देना तेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। स्पीच इज अवर बर्थ राइट, समझे !

जमूरा : पर उस्ताद पेट तो खाली है।

मदारी : बकवास बन्द।

जमूरा : लेकिन उस्ताद......

मदारी : बकवास बन्द, शो का टाइम हो गया है। (डमरू बजाकर) जमूरे !

जमूरा : उस्ताद।

मदारी : जो पूछेगा बताएगा।

जमूरा : बताएगा।

मदारी : साब लोगों को खेल दिखाएगा।

जमूरा : दिखाएगा, दिखाएगा। पर उस्ताद भाषण के वास्ते मंच तो होना चाहिये। भाइयो जरा मंच बनायें मुझे एक भाषण देना है।

(चार अतिरिक्त पात्र, चार कोनों में बैठ जाते हैं। दो पात्र माइक बनाते हैं। मजूरा माइक में फूंकता है। सँवारता है।)

लेडीज एण्ड जेन्टिलमेन......

मदारी : अबे हिन्दी बोल।

जमूरा : उस्ताद डोंट डिस्टर्ब मी...अरे कितने दकियानूसी ख्याल हैं आपके, इम्प्रेशन मारने को चार लफ्ज तो अंग्रेजी में बोलना ही पड़ता है और फिर हिन्दी सब कहाँ पचा पाते हैं! खैर..तो भाइयो, भीड़ देख कर मुझे बेहद खुशी होती है। वैसे भीड़ और भाषण दोनों बहुत सस्ती और उपलब्ध वस्तुयें हैं। हमारे यहाँ जहाँ भीड़ नहीं होती वहाँ लगवाई जाती है। जहाँ लग जाती है वहाँ से हटवाई जाती है। यह एक मार्डर्न थ्योरी है। शायद आप समझे नहीं...समझ भी कैसे सकते हैं, मर्द और

न बुद्धिजीवी होते हैं। माडर्न चीज ही वह है, जो दिमाग के ऊपर से निकल जाये। न बनाने वाले को समझ आए, न देखने वाले को समझ आए।

(जमूरे को हटा कर मदारी मंच पर आता है)

मदारी : यह छोरा काफी देर से आपको बोर कर रहा है। पर क्या करूँ साहेबान आदत से मजबूर है। जहाँ जरा भीड देखता है भाषण झाड़ने लगता है। मंच है ही ऐसी कुत्ती चीज। (पात्रों से) चलो, चलो यह मंच हटाओ, हमें खेल दिखाना है, भाषण नहीं देना है। (पात्र वापस आ कर जनता में बैठ जाते हैं)

जमूरा : ये चार छोकरे आपको खेल दिखायेंगे साब।

मदारी : हाँ तो मेहरबान, कदरदान, पानदान, थूकदान, पीकदान, मेरी बात सुनें लगा कर ध्यान। आज आपको दिखायेंगे हम एक नया खेल।

(चार पात्र आ कर खड़े हो जाते हैं)

जमूरा : ये चार बेजान पुतले हैं।

एक : पुतले कहाँ ये तो अच्छे-खासे, खाते-पीते छोकरे हैं।

जमूरा : (झिड़क कर) चुप्प! खेल दिखाना है, तो जैसा हम कहेंगे वही मानना पड़ेगा। हम कहेंगे आप गधे हैं तो आप गधे हैं, समझे। क्योंकि जो खेल दिखाता है वही बुद्धिमान होता है। यही खेल की नीति है। ऐसी ही कुछ राजनीति भी होती है और खेल मे राजनीति हो तो क्या कहने। हाँ तो मैं कह रहा था कि ये बेजान पुतले हैं।

मदारी : इन बेजान पुतलो मे आज हम कुछ प्राचीन ग्रन्थों के खलनायकों की आत्माओं का प्रवेश करायेंगे। जैसे

रावण, दुर्योधन, कंस और हिरण्यकश्यप ।

जमूरा : पर उस्ताद कहीं लोगों की धार्मिक भावनाओं को ठेस लगी, तो आपका पूरा नाटक चौपट हो जाएगा ।

मदारी : जमूरे यह अंधेर नगरी है, यहाँ तो सब चौपट है ही, फिर हम तो खलनायकों को बुला रहे हैं जिनका लोग नाम लेना भी पसन्द नहीं करते । कोई अपने लडके का नाम रावण, दुर्योधन नहीं रखता । और इस पर भी किसी को आपत्ति हो तो हुआ करे, हम कब तक लोगों से डरते रहेंगे ।

जमूरा : डरें हमारी जूतियाँ ।

मदारी : तो मैं कह रहा था कि हम इनमें आत्मायें बुला रहे हैं, खलनायकों की आत्मायें ।

जमूरा : *अब आप कहेंगे कि हमने किन्हीं महापुरुषों की आत्मायें* क्यों नहीं बुलायीं, वेरी सिम्पल क्वेश्चन । दरअसल महान आत्मायें आजकल अपनी जिन्दगी पर बन रही *या बन चुकी फिल्मों में व्यस्त हैं ।*

मदारी : तो आइये सबसे पहले आपको अपने पात्रों का औपचारिक परिचय करा दूँ ।

जमूरा : ठहरो उस्ताद, ऐसे में कन्फ्यूजन होगा । ऐसा करो कि मैं तख्तियाँ देता हूँ, इन्हें पात्रों के गले मे डाल दो ।

मदारी : सालिड आइडिया ! ला तख्तियाँ ला ।

(चारों पात्रों को तख्तियाँ पहनाता है)

हाँ तो मेहरबान अब अपना खेल शुरू होने को है । सबके गले मे तख्तियाँ पहनाता हूँ जिससे कोई कन्फ्यूजन न हो । ये हैं महाराजा रावण । ये है दुर्योधन महाभारत के खलनायक । तीसरे हैं कंस महोदय ! कृष्ण

वर्सेस कंस। और चौथे हैं हिरण्यकश्यप, याने वही प्रहलाद वाले।

(चारो पात्र अलग-अलग दिशाओं मे मुँह करके खड़े हो जाते हैं)

जमूरा : गलतफहमी मे मत पड़िये बाबूजी ये लोग कुछ नही कर सकते। गद्दी के बिना किसी की कोई औकात नही होती।

मदारी : अभी इनको चलता करता हूँ। (पात्रो के चारों ओर घूम कर) जै मामी दिल्ली वाली।

तू ऊँचे महलों वाली।
तेरी बीवी झोपड़ पट्टी वाली।
ओम ह्रीम क्लीम कट् ह्रीम क्लीम कट्...

(चारो पात्र हरकत में आ जाते हैं। घूम कर सामने मुँह कर लेते हैं।)

जमूरा : उस्ताद आत्मायें प्रवेश कर रही है।

मदारी : (बीड़ी निकाल कर) ये बीड़ी जला और चल कर किनारे बैठ जा, अपना रोल अब काफी पीछे है। आराम करते है।

जमूरा : चलो उस्ताद।

(चारो पात्र अट्टहास करते है। और एक साथ आगे बढते है)

हिरण्यकश्यप : अरे हल्लो मिस्टर रावण !

रावण : हलो मिस्टर हिरण्यकश्यप कैसे हैं !

कंस : गुडमानिंग मिस्टर दुर्योधन !

दुर्योधन : वेरी गुडमानिंग मिस्टर कंस !

कंस : क्या बात है मिस्टर रावण बहुत दिनो में दिखाई दिये ?

व्यक्ति तीन : साले चंदे की तो दारू पी गये, रंग बदरंग नहीं होगा !

रावण : (पुतले की तरफ इशारा करके) देखो दोस्तो यह मेरा पुतला है।

सब : आपका !!

रावण : हाँ.. मेरा। कल दशहरा है न। वैसे तो पुतले जलाना अब आउट आफ डेट हो गया है, लोग यथार्थ मे ज्यादा विश्वास करते है। घर, दुकान और बसें जलाने में ज्यादा सुख मिलता है।

सब : लेकिन ये आपका पुतला क्यो जला रहे है ? क्या आप कहीं के नेता है ?

रावण : अजी मै भी एक जमाने मे बड़ा नेता होता था, बड़ी इमोशनल कहानी है मेरी, इस कहानी मे ड्रामा है, थ्रिल है, एक्शन है। मैं कभी शेरे लंका के नाम से जाना जाता था। लेकिन सीता अपहरण काड ने मेरी सारी इमेज धो कर रख दी, मेरा असंतुष्ट भाई दलबदल कर विरोधी खेमे मे मिल गया, उसने मेरी पूरी पोल खोल दी और मेरी लुटिया डूब गयी। बंटाढार हो गया।

सब : वेरी सेड ! वेरी सेड !

रावण : (तैश मे आकर तलवार घुमाने की मुद्रा मे) वो तो सब ठीक है, लेकिन अफसोस तो इस बात का है कि मैंने एक ही सीता का अपहरण किया था, यहाँ तो रोज सैकड़ों सीताओ का अपहरण हो रहा है फिर भी लोग-बाग उनका पुतला जलाने की जगह मेरी ही मिट्टी पलीत करने पर क्यूँ तुले हुए है ! यह ज्यादती है, बेइन्साफी है मेरे साथ। इसके खिलाफ मैं आवाज उठाऊँगा।

एक : महाराज रावण की !

सब : जय !

(सब माला पहनाने का अभिनय करते है । रावण हाथ जोड़ता है । सब नाचते है)

एक एकम एक, देख तमाशा देख
राजा जी अब राज करेंगे
पाँसा दिया फेंक ।

(रावण को मुकुट पहना कर तिलक किया जाता है)

दो एकम दो, इक्कम नम्बर दो
राजा जी की जय बोलो
फिर भोजन पानी लो ।
तीन एकम तीन, देखो बंदर तीन
कहो सुनो और देखो बुरा
वो फिल्मो मे तल्लीन ।

(पात्र तीन बंदरों की मुद्रा बनाते है)

चार एकम चार, रथ पे सवार
राजा की सवारी आयी
बाजू हटना यार ।

(एक आदमी राजा बनता है और दो चोबदार)

पाँच एकम पाँच, साँच को है आँच
आँगन टेढ़ा रहने दे, नाच सके तो नाच ।

(सब नाचते हैं । एक राजा को मशविरा देता है । राजा नही मानता)

छ: एकम छ:, इनकी जै जै
खायेजा तू बेफिक्री से
हो जाने दे क्षै ।

सात एकम सात, छोड़ो जात-पात
जात बस एक आदमी है
और न दूजी जात।
आठ एकम आठ, कैसी सांठ गांठ
हम तुम देखो घिसट रहे हैं
राजा करते ठाठ।
(एक आदमी दूसरे को मारता है। थैली राजा को देता है। राजा हँसता है)
नौ एकम नौ, तुम भी उल्लू हो
गिरगिट बनकर जो
घड़ियाली आंसू रो।
दस एकम दस, बहुत हो गया बस
नही और सहने की क्षमता
बस बस बस।
(कुछ व्यक्ति सिपाही बने दो पात्रो को मारते है)
अक्कड़ बक्कड बम्बे बो, अस्सी नब्बे पूरे सौ
सौ मे लगा तागा, राजा निकल कर भागा।
(सब घेरा बना कर नाचते हैं। राजा निकल कर भागता है। सब पीछे भागते हैं)
(सभी शोर करते हैं। कोतवाल का प्रवेश)

कोतवाल : (रावण का कालर पकड़ कर) क्यो वे !

रावण : यह क्या बेहूदगी है।

कोतवाल : कोतवाली चल, सब पता चल जाएगा, हरामखोरो, ये सड़क है कोई थिएटर नही। बेवजह भीड़ इकट्ठी करके हिप्स हिला रहे हो सालों।

रावण : क्या करें सरकार, नौकरी मिलती नही, बाप घर मे घुसने नही देता, बीबी सीधे मुंह बात नही करती !

कोतवाल : बस इतनी सी बात पर चें-चें। इसीलिए भांड़ हो गये हो। चलो थाने, निकालता हूँ तुम्हारी सारी हेकड़ी।

दुर्योधन : पर सरकार यह तो प्रजातन्त्र है।

कोतवाल : ऐसी की तैसी, अभी दिखाता हूँ डेमोक्रेसी। जेब में माल हो तो निकालो, वरना थाने ले जाऊंगा। पता नहीं हमारे मंत्री जी क्या कहते हैं!

सब : क्या?

कोतवाल : कहते हैं कि हमें अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करनी है।

कंस : आपकी तो मजबूत हो जाएगी पर हमारी ढीली हो जाएगी न साब।

कोतवाल : वो तो ढीली है ही, थोड़ी और हो जाएगी बस। चलो माल निकालो।

(रावण पर्स निकालता है। कोतवाल छीन लेता है)

रावण : अरे सुनिये तो।

दुर्योधन : (रावण से) अरे जाने दे यार, कहाँ की मुसीबत बुला रहा है।

रावण : साला पूरी पगार ले गया, आज ही मिली थी।

कंस : धीरज रख यार, मत भूल कि तू एक राजा है, एक्स राजा।

रावण : सो तो ठीक है, पर अब धन कहाँ से आएगा?

हिरण्यकश्यप : धनोपार्जन की क्या चिंता है यार! राजा हो कर भी ऐसी ओछी बात कर दी।

दुर्योधन : अरे कंस जी से पूछो, कैसे चंदे से अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत किए रहते हैं।

रावण : चंदा आर्थिक स्थिति मजबूत करने का श्रेष्ठ हल है, इस विषय पर पी०एच० डी० की है मैंने।

दुर्योधन : पर तुम्हे थीसिस लिखते हुए तो मैंने कभी नही देखा।

कंस : अरे इसके मामा जी यूनिवर्सिटी में डीन थे न।

सब : (हँसते है) अच्छा तभी।

हिरण्यकश्यप : पर इस समय प्रश्न है चंदे का।

रावण : सबसे पहले मेरा पलेश बेक देखो।
(रावण सो रहा है। चोबदार खड़ा है।)

तीन पात्र : दुहाई है सरकार।

रावण : क्या बात है उल्लू के पट्ठों, बहुत डिस्टर्ब करते हो। मंत्री क्या बात है?

मंत्री : महाराज प्रजा बाढ और तूफान से त्रस्त है।

रावण : बस इतनी सी बात को लेकर हंगामा। अरे बाढ ही आयी है, प्रलय तो नही हुयी।

मंत्री : नही सरकार।

रावण : फिर इसमे नई बात क्या है। चलो भागो, सोने दो, जानते नही हम सपना देख रहे हैं।

मंत्री : (कान मे) महाराज इन को टरकाइये, पीछे पडे है साले।

रावण : हम समझ गए मंत्री। हमारी दानशीलता पर संदेह मत करो। तुरंत कोषागार से एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ बाढ़ पीड़ितों को देने की घोषणा कर दो। प्रजा से चंदा एकत्र करने का आदेश दे दो।

मंत्री : जो आज्ञा महाराज।

रावण : और हाँ, हमारा पुष्पक विमान निकलवा दो। हम बाढ़ ग्रस्त इलाको का दौरा करेंगे।

सब : महाराज की जय। (सब प्रस्थान करते हैं)

मेघनाद : मुझे भी ले चलें महाराज, मैं भी फिल्मो और डिस्को

से बोर हो गया हूँ, इस बहाने विमान से घूम कर हम भी मन बहला लेंगे।

रावण : तू बडा हठीला है रे मेघनाद, अच्छा चलना।

(प्रस्थान)

(दुर्योधन बैठा नाश्ता कर रहा। तीन पात्र दौड कर आते हैं)

सब : महाराज की जय।

दुर्योधन : क्या बात है ?

एक : महाराज प्रजा सूखे से ग्रस्त है, चारो ओर अकाल पड़ रहा है, लोग भूखे मर रहे हैं।

दुर्योधन : तो डबल रोटी खाओ।

दो : महाराज पीने को पानी नही है।

दुर्योधन : दूध पियो।

सब : हमे बचा लें महाराज, हमारे पास कुछ भी नहीं है अन्नदाता !

दुर्योधन : मंत्री जी !

मंत्री : जी महाराज।

दुर्योधन : मंत्री जी, हमारा हुक्म है कि हमारे हिस्से का बचा हुआ मक्खन और डबल रोटी प्रजा मे बांट दो। चंदा एकत्र करने को चारों ओर आदमी दौड़ा दो।

(राजा का प्रस्थान। कंस का प्रवेश)

कंस : (अपने मंत्रियो से) क्यो रे धूर्तो ! शीत लहर में कितने मरे ?

मंत्री : हुजूर चार मरे और चालीस मरने वाले हैं।

कंस : इतने कम आकड़े अखबारो को शोभा नही देते। जो

नही मरे है, उन्हें तुरन्त मार दिया जाए और खजाने का मुंह खोल दो।

मंत्री : खजाना तो खाली है महाराज।

कंस : तो चंदा इकट्ठा करो। तत्काल।

(सब घूम कर नाचते है)
चंदा दे चंदा, चदे से है ये बंदा।
बंदे का है ये धंधा, धंधा मंदा।
(चंदा लेने के लिए भागमभाग)
चितकगण दो चंदा, चितन करने को चंदा
घर-घर जाकर लो चंदा, घर बनवाने को चंदा
घर खुदवाने को चंदा।
(राजा आते हैं)
देखो राजा साव खड़े हैं, जेबो मे बादाम पड़े है
किस्मत टोपी मे गढ़ी, कोठी बंगला कार खड़ी
गंदा, गंदा रे, गंदा, चंदा, चदा दो, चंदा।
(तीन पात्र राजा को इंगित करते हैं)
देश पर है विपदा भारी
हम सेवक आज्ञाकारी
नीति उसे ही कहते हैं
जो जगजाहिर हो हितकारी
कितना प्यारा ये धंधा
चंदा, चंदा दो, चंदा।
(चारो राजा पात्र गाते हैं)
चंदे के रोजगार बडे
बड़े-बड़े है पार खड़े
काला धन बन जाए उजला

बड़े-बड़े सब फिसल पड़े ।
फिर मैं तो छोटा सा बंदा
चंदा, चंदा दो, चंदा ।
(सब जाते हैं सिर्फ चारों राजा रह जाते है)

रावण : तो इस तरह चंदा एकत्र होता था और अभी भी होता है ।,

हिरण्य : इसी संदर्भ में मुझे एक शेर याद आया ।

सब : इरशाद, इरशाद ।

हिरण्य : चाँद के निखार से कवि कविता बनाता है ।
और चंदे से चंदा ग्राही अपना मकान बनाता है ।

सब : वाह ! वाह !

रावण : अगर मैं साहित्य सचिव होता, तो ज्ञानपीठ की सिफारिश कर देता ।

कंस : मैं भारत रत्न दिलवा देता ।

दुर्योधन : मैं नोबल प्राइज दिला देता ।

रावण : क्यों क्या सचिवालय में कोई जुगाड़ नहीं है ?

हिरण्यकश्यप : दुर्भाग्य !

रावण : इजन्ट मैटर । मेरी मानों तो अपनी रचनाओ के कूड़े को इकट्ठा करके, एक विचित्र सा मुखपृष्ठ और अजीब सा शीर्षक देकर संकलन छपवा डालो । फिर किसी गणमान्य व्यक्ति को बुलाकर किताब का विमोचन करवा डालो ।

हिरण्य : किसे बुलाऊँ ?

रावण : (दूसरी तरफ मुँह करके) बेवकूफ !

कंस : सिरफिरा जाहिल गँवार !

दुर्योधन : उल्लू का पट्ठा !

रावण : अबे घामड़ ! लगता है तुम साहित्य का [illegible] ही नहीं जानते।

कंस : इसीलिए यहीं एड़ियाँ रगड़ रहे हो, वरना कब के संसद-भवन पहुँच गए होते।

हिरण्य : अरे तो बताओ क्या करूँ ?

दुर्योधन : अरे करना क्या है, एक गोष्ठी का आयोजन करके कुछ छटे हुए लोगों को बुलाओ।

हिरण्य : छटे हुए ?

दुर्योधन : हाँ यार छटे हुए। फिर किसी गणमान्य व्यक्ति को अध्यक्ष बनाओ। इससे तुम्हें दो तरफा फायदा है। एक तो साहित्य क्षेत्र में अनावश्यक घुसपैठ का मौका मिलेगा, दूसरे बड़े-बड़े लोगों से सम्बंध बढ़ेंगे।

हिरण्य : बढ़िया सुझाव है।

दुर्योधन : इसे कहते हैं आइडिया।

कंस : वाह क्या देवताओं सी बात की है।

हिरण्य : अजी देवता होंगे आपके दुश्मन, देखा नहीं कैसे सरेआम मेरा मर्डर कर दिया गया। मेरे नादान छोकरे को गद्दी पर बैठा दिया गया, ताकि उनकी मनमानी चल सके। दे आर वेरी क्लेवर। मेरी भी तो इच्छा थी कि खूब जियूँ। राज सुख भोगूँ। फिर अपने लड़के को कुर्सी पर चिपका दूँ। आखिर अपनी संतान को कुर्सी पर बैठा देखने की इच्छा किसमें नहीं होती !

दुर्योधन : अजी मेरे साथ क्या कम धोखा हुआ है, खैर छोड़ो ! चलो कहीं घूम आयें। मेरी बड़ी इच्छा हो रही है, अपनी राजधानी इंद्रप्रस्थ घूम आऊँ।

कंस : जाना तो मुझे भी था। अपनी राजधानी तक।

हिरण्य : मुझे अपने राज्य का निरीक्षण करना था, प्रजा की हालत देखनी थी।

रावण : अजी प्रजा की हालत तो हमेशा ही खस्ता रहती है, मुझे तो बस लंका घूमने जाना था, जस्ट फार इन्टरटेनमेन्ट। सुना है इधर वहाँ बड़े...।

दुर्योधन : पता लगाओ कि कोई बस या ट्रेन है दिल्ली के लिए ?

हिरण्य : (फोन करता है) हलो रेल्वे इन्क्वायरी, गाड़ी की पोजीशन क्या है ? क्या राइट टाइम...।

सब : झूठ सफेद झूठ।

कंस : ऐसा करो कि रेल से ही चलें।

दुर्योधन : भारतीय रेल ! न बाबा इससे अच्छा तो पैदल ही ठीक है। समय से भी पहुँचेंगे और जिंदगी रही, तो एक नहीं दसियों बार दिल्ली जा सकते है। तो मैं तो चला।

रावण : अरे भाई यह मक्खन का डब्बा तो लेते जाओ, दिल्ली में इसकी बड़ी डिमांड है।

दुर्योधन : हाँ मैं तो भूल ही गया था। मेरा ख्याल है आप लोग भी चलें।

रावण : चलो भाई तुम कहते हो, तो हो ही आते हैं। चलो भाई उड़ो।

(चारों उड़ने का अभिनय करते हैं)

कंस : रुको यहाँ उतरो...मथुरा...मेरी राजधानी आ गयी।

सब : अरे यहाँ क्या मजमा लगा है ?

दुर्योधन : किसी बड़े डाकू के आत्मसमर्पण का आयोजन तो नहीं हो रहा है !

रावण : शायद राशन बँट रहा है।

दुर्योधन : पर बोर्ड पर तो लिखा है कि राशन नहीं है।

कंस : अरे बोर्ड तो बस बहाना है। शायद भाषण हो रहा हो।

हिरण्य : कोई थियेटर है शायद। चलो पास चल कर देखते हैं। (एक व्यक्ति कृष्ण और दूसरा कंस का अभिनय कर रहे हैं। बोर्ड लगा है 'कृष्ण-लीला'

रावण : अरे यह तो कृष्ण-लीला हो रही है। वो देखो कंस की पिटाई हो रही है।

कंस : (गुस्से मे) बंद करो यह। मेरा चरित्र हनन किया जा रहा है। राजा तो आज भी हैं, सिर्फ ब्राण्ड बदल गया है। मेरी बस बुराइयां ही गिनी जाती हैं। बरसों से मेरे केरेक्टर की छीछालेदर हो रही है, इससे क्या बुराइयां खत्म हो गयी हैं ?

सब : नहीं बिल्कुल नहीं।

रावण : जो लोग कृष्ण का रोल करते हैं।

कंस : चंदे का पैसा गोल करते हैं।

हिरण्य : क्लब में जाकर जुआ खेलते हैं।

दुर्योधन : मुर्गा उड़ाते हैं दारू पीते हैं।

रावण : दिनभर में सौ-सौ झूठ बोलते हैं।

कंस : और कंस बनाता है बेचारा गरीब पाण्डे, जो एक तो गरीब ऊपर से ईमानदार, फिर भी उसी की पिटाई होती है।

हिरण्य : दरअसल एडजेस्टमेंट ठीक नही है, चलो आगे बढो। (सब उड़ते हैं)

हिरण्य : मेरी राजधानी आ गयी, रुको।

चार पात्र : महाराज हिरण्य की जय।

हिरण्य : मेरी प्राणो से प्रिय प्रजा तू खुश तो है न ?

सब : त्राहि भगवन त्राहि ।

रावण : क्या हुआ, कोई दंगा फसाद ?

कंस : डकैती ?

दुर्योधन : बलात्कार ?

हिरण्य : रिश्वतखोरी ?

रावण : भ्रष्टाचार ?

कंस : भूख हड़ताल, आंदोलन, लाठी चार्ज ?

रावण : आगजनी, हत्या, जेल ?

सब . नही सरकार यह तो रोजमर्रा की चीजें है । बहुत आम बातें हैं ।

रावण व अन्य : फिर ?

एक : परसों रात की बात है महाराज, आपके पुत्र प्रहलाद को लेकर होलिका ने जब अग्नि मे प्रवेश किया...तो....

हिरण्य : तो क्या ?

सब : महाराज होलिका बच गयी और प्रहलाद जल गया ।

हिरण्य : अंय ।

(सब पात्र घूमते हैं)

एक : यह आज की कथा है ।

दो : झुग्गी झोपड़ी जलती है ।

तीन : रोज हरिजन जलते हैं ।

चार : पेट में आग जलती है ।

पांच : बिन दहेज के दुल्हन जलती है ।

रावण : एक ऐसी भी चीज है जो नही जलती ।

सब : वह क्या ?

रावण व अन्य : चूल्हा भई चूल्हा ।

चलो भाई उड़ो।

रावण : उतरो भाई उतरो दिल्ली आ गयी।

हिरण्य : दिल्ली नहीं न्यू देहली कहिये। लगता है एशियाड में आप दिल्ली नहीं आये!

दुर्योधन : एशियाड क्या?

कंस : एशियाड का मतलब है प्रगति का प्रतीक।

दुर्योधन : ओह समझा। देखो न कितनी प्रगति हुई है, कितने फ्लाई ओवर, नये स्टार होटल, बड़े-बड़े पार्क, रौनक तो देखो, एकदम इंगलैण्ड हो गयी है, अपनी दिल्ली।

हिरण्य : रंगीन टी० वी० में सब रंगविरंगा। एक भी झोपड़ी नहीं, एक भी भिखारी नहीं। लगता है गरीबी हट गयी है, समाजवाद आ गया है।

कंस : अरे समाजवाद यहां क्या लेने आयेगा। वो तो हमे कल रास्ते में मिला था।

रावण : हट वे वो तो मरा हुआ बैल था।

दुर्योधन : तो फिर गरीबी, बेकारी या बेरोजगारी रही होगी।

कंस : तुम्हारी खोपड़ी रही होगी। अबे ये चीजें कभी मरती हैं। (दुर्योधन को खींच कर) अबे क्या इम्पोर्टेड कार के नीचे मरेगा!

हिरण्य : भाई मौत हो तो ऐसी। लो बस आ गयी। चढ़ो जल्दी। (चार लड़के बस बन कर आते है।)

एक : चलो उतरो, संसद भवन आ गया। (रावण व अन्य धक्का-मुक्की करके उतरते हैं)

कंस : अरे भाई कोई है।

सब : यहां आम आदमी का प्रवेश वर्जित है।

दुर्योधन : सुनिये जनाब हम लोग घूमने आये हैं, बाहर से।

वरी होने वाली है।

एक : देखो पुलिस आ रही है।

(सब भागने लगते हैं। रावण भी खड़ा हो जाता है)

रावण : अरे भाई क्यों भाग रहे हो? भला रावण भी कभी मरा है।

सब : हम लोग नहीं मरा करते हैं।

कंस : यह तो एक नाटक था, आपको उलझाए रखने का नाटक।

दुर्योधन : अगर हम ऐसा न करते, तो आपका ध्यान हमारी ओर कैसे जाता!

हिरण्य : कितने अच्छे रंगकर्मी हैं हम, पर बेकार।

रावण : बेकार हैं इसीलिये तो रंगकर्मी हैं। (सबसे) अरे चोप... चोप...चोप इतनी भीड़ जमा है, भाषण देने की इच्छा हो रही है। आप लोग सोच रहे होंगे कि मैं कौन हूँ। मैं रावण हूँ। ये कंस हैं, ये दुर्योधन हैं, और ये हिरण्यकश्यप हैं। आप लोग हमेशा हमें मारते हैं, पर हम तो सर्वव्यापी हैं। हर जगह मौजूद हैं—

राजाजी की कुर्सी में हम, मन्त्री जी की टोपी में हम
बाबूजी की फाइल में हम, चपरासी की चोटी में हम
हर जगह है अपना वाद, अपना वाद जिन्दाबाद।

(सब उदास बैठ जाते हैं)

सब : हम सब अमर हैं। हमारा केरेक्टर इतना गिराया गया है। इंसान गलियों का पुतला है। हमसे भी गलती हुयी थी। हम सब एक ही गलती के शिकार हैं। हर घर दुष्ट की छाया है। बम देवी की माया है। देवी महामाया की तपस्या जरूरी है। क्या करें मज-

बूरी है। चलिये तपस्या की जाये, शायद देवी खुश हो जाये।

(सब तपस्या की मुद्रा में बैठ जाते हैं)

हे देवी महामाया, दूर कर विपत्ति की छाया।

(चार पात्र, सिपाही, चोबदार आते हैं)

एक एवं दो : योर अटेंशन प्लीज...योर अटेंशन प्लीज! चारों दिशाओं के लोगों सावधान। झुग्गीवाले सावधान। सब्जीवाले सावधान। केलेवाले सावधान। ठेलेवाले सावधान। पानवाले सावधान। दुकानवाले सावधान। बाबू अफसर सावधान। लड़का-लड़की सावधान। गुड्डा-गुड्डी सावधान। मियाँ-बीवी सावधान। सावधान...सावधान। देवी महामाया पधार रही है...

देवी : वत्स हम तुम्हारी तपस्या से खुश हुये। कहो क्या विपत्ति है। गैस का कनेक्शन चाहिये, या गाड़ी में रिजर्वेशन? जल्दी बोलो, आई हैव सेवरल अपाइंट-मेंटस्।

रावण : हे महामाया आप तो त्रिकालदर्शी है। अंतर्यामी है, हमे बताइये यह क्या हो रहा है। आदमी पाजामे से बाहर क्यों हो रहा है।

कंस : बसो, गाड़ियों में इतनी भीड़ क्यों है, कैरोसिन के डब्बे खाली क्यो है, सीमेन्ट का घोटाला क्यों है, गैस सिलेन्डर मे आग क्यों है?

हिरण्य : मक्खन इतना महँगा क्यों? कालाबाजारिये पकड़े नहीं जाते क्यों? सटोरिए ऐश कर रहे हैं, क्यों? अफसर भ्रष्टाचार कर रहे है क्यों?

रावण : आज हर आदमी रावण है।

कंस : कंस है।

दुर्योधन : दुर्योधन है।

हिरण्य : हिरण्यकश्यप है...

सब : लेकिन हमें ही बुरा बताया जाता है, हमारी ही मट्टी पलीत की जा रही है क्यों, आखिर क्यों ?

देवी : वत्स युवा पीढ़ी गुमराह हो गयी है, इसे फैशन का रोग लग गया है। किसी को हमारी संस्कृति की परवाह नहीं। हर आदमी मौके की तलाश में है। मुझ पर आस्था रखो, मेरा भजन करो। चढ़ावा चढ़ाओ। खूब खाओ, खूब खिलाओ। मेरे भक्तों से सम्बन्ध बनाओ। यही मुझ तक पहुँचने का रास्ता है। जिसने भी मन, वचन, कर्म से मेरा प्रचार प्रसार किया है, उन्हें कभी भी कोई भी सांसारिक क्लेश नहीं हुआ, बाकी समस्याओं का तुम्हारे पास बेहतर हल है। जयहिन्द।

सब : सब समस्याओं का क्या हल है देवीजी ?

देवी : (ठेंगा दिखाती है) आई मीन प्रापर थिंकिंग, सही चिंतन।

सब : और हमारी समस्याएँ ?

देवी : (घड़ी देख कर) सारी मुझे देर हो रही है।

(देवी का प्रस्थान)

रावण : (ठंडी साँस लेकर) चलो भाई चिंतन करें, देवीजी कह गयी है।

कंस : मुझे भी बड़ी देर से चिंता लगी है।

हिरण्य : इस देश में कितना चिंतन होता है, कितने बड़े चिंतक है, देश की चिंता में चौबीस घण्टे डूबे रहते हैं। सम-

स्याओं से जूझते रहते हैं। कितने जुझारू है वे लोग !
(सब चिंतक की मुद्रा बनाते है और गाते है)
चिंतक-चिंतक-चिंतक
तक धिन, तक धिन, तक धिन, तक
परिवर्तन है जरूरी और युग निर्माण आवश्यक
चिंतक...
लंहगे हो गये महँगे
टोपी हो गयी सस्ती
रोटी आयोजन होगा, पहले देखो कत्थक
चिंतक...
हम तुम ताश के जोकर
राजा साब के नौकर
हुकुम बजाए जायेंगे हम
खाल बचेगी जब तक
चिंतक...
हे महाप्राण, हे महापुरुष, हे युगमानव पथ दर्शक
हे बुद्धिजीवी, हे ज्ञानदेव, हे मानव के रक्षक
बरगद की वह छांव कहां जो ज्ञान जाग्रत कर दे
जड़ खोद-खोद कर गिरा रहे है, बरगद के ये भक्षक
चिंतक
ये देह है पूरा बरगद, इक लंबा चौड़ा बरगद
इक ऊँचा पूरा बरगद,
बरगद है इक छत्ता,
बरगद के नीचे कुत्ता
बरगद, बरगद ! बरगद, बरगद कुत्ता ।
कत्ता : काफी चिंतन के बाद हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि हमें एक सूत्र में बंधना चाहिये, एक ग्रुप यानी एक

पार्टी बनानी होगी।

रावण : जिसमें एक अध्यक्ष होगा।

कंस : एक उपाध्यक्ष।

दुर्योधन : एक कोषाध्यक्ष।

हिरण्य : सचिव, महासचिव, सह सचिव होगा।

रावण : अध्यक्ष पद के लिये हमें एक सज्जन आदमी की जरूरत होगी।

कंस : अध्यक्ष पद से सज्जन-दुर्जन का क्या सम्बन्ध है ?

रावण : मेरा भी यही विचार है। अतः अध्यक्ष पद हेतु मैं अपना नाम प्रस्तावित करता हूँ।

दुर्योधन : आहा! हा! हा!...आपमें क्या कोई सुर्खाब के पर लगे हैं? अपना पिछला रिकार्ड देखा है, सीता अपहरण कांड भूल गये ?

रावण : अपने गरेबान में भी झाँक लेते, क्या तुमने भी द्रौपदी को भरी सभा में निर्वस्त्र करके अपनी जघा पर बिठाने का हुक्म नहीं दिया था !

कंस : भई एक दूसरे पर कीचड़ मत उछालिये। इसमे पार्टी की प्रतिष्ठा को धक्का लगता है। ऐसी ही कोई बात है, तो फिर यह भार मुझे ही ग्रहण करना होगा। मेरा चरित्र एकदम बेदाग है।

हिरण्य : वाह रे बेदाग चरित्र, कंस मामा और बेदाग! पूरी मामा कौम बदनाम करा दी। इस पद की गरिमा को कोई बचाये रख सकता है, तो वह मैं हूँ।

कंस : यू क्रूअल फैलो, अरे तुमने तो अपने ही पुत्र को नही बख्शा। जिंदा जला देने तक की कोशिश की।

रावण : आप लोग रावण के पराक्रम को भूल रहे हैं।

दुर्योधन : मेरी शक्ति से क्या परिचित नही हो ?

कंस : कंस के बल को चुनौती मत दो !

हिरण्य : मेरे महाबल को मत ललकारो !

(सब अट्टहास करके तलवारें घुमाते घूमते हैं)

सब : सबसे ज्यादा मैं बलवान, दुनिया गाती मेरे गान।
व्यर्थ न मारो अपनी शान, चली जाएगी क्षण में जान।

रावण : परमाणु बम से बचो मूर्खो !

दुर्योधन : प्रक्षेपास्त्रों और नये-नये हथियारों से नहीं बच पाओगे !

कंस : मुझसे डरो, नहीं तो मारे जाओगे।

हिरण्य : मैं खून से सारी दुनिया को नहला दूंगा।

(चार अन्य पात्रों का प्रवेश)

सब : खुल खुल गए।(हाकर की तरह चारो ओर दौड़ते हैं) स्वर्ग के द्वार खुल गये। हत्याएँ कीजिए, ईनाम लीजिये। अनगिनत हत्याओं पर एक कुर्सी मुफ्त। खुल गए खुल गए स्वर्ग के द्वार खुल गए। चलता रहे नर-संहार। आसाम, पंजाब, कश्मीर और सरहद पार। खुल गए हैं ब्रांच आफिस।

एक : लंकाकाण्ड से एशिया में सनसनी।

दो : ग्रेनाडा पर अमरीकी हमला।

तीन : इंगलैण्ड का फाकलैण्ड पर कब्जा।

चार : ईरान मे कम्युनिस्टों की हत्याएँ।

एक : अबादान शहर आग की लपटो में।

दो : तेल के कुओं में भीषण आग।

तीन : इजराइल द्वारा फिलिस्तीनियो की हत्या।

चार : टैंक...खड़...खड़...घड़

एक : तोपें...धांय...धांय...धांय

दो : अणुबम...परमाणु बम...धम्म...धम्म...

सब : धुआँ...धुआँ......धुआँ...
लाशें ..लाशें...लाशें...खून...खून...खून...
(सब स्लोमोशन मे घूमते हुए गिरते जाते है)
शांति . शांति...शांति
(रावण व अन्य आगे बढते हैं तभी जमूरा और मदारी दौड़कर आते हैं)

मदारी : (लकडी घुमाता हुआ) नहीं नही नहीं भाई, लौट आओ। भारत से चलते चलते विदेश पहुँच गये। विश्व युद्ध करने लगे, भाई रोजी रोटी चलने दो। ऊँ ह्वीम क्लीम फट। अरी आत्मा हट।
(सब सामान्य हो जाते हैं)

जमूरा : मेहरबान यह था हमारा खेल। खेल अब खत्म होता है। अगले दफे फिर किसी नुक्कड़ पर भेंट होगी। सलाम।

सब : देश है पूरा बरगद।
एक लम्बा चोड़ा बरगद।
बरगद है एक छत्ता
बरगद के नीचे कुत्ता।
बरगद, बरगद। बरगद, बरगद कुत्ता।

